श्री नवग्रह जिनदेव विधान

श्री 1008 वासुपूज्य भगवान

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान

श्री 1008 चन्द्रप्रभु भगवान

श्री 1008 आदिनाथ भगवान

श्री 1008 शान्तिनाथ भगवान

श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ भगवान

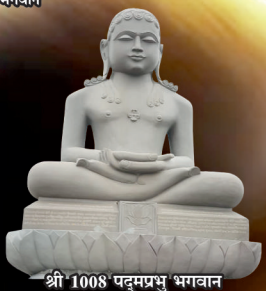
श्री 1008 पद्मप्रभु भगवान

श्री 1008 नेमिनाथ भगवान

श्री 1008 पुष्पदंतनाथ भगवान

रचयिता : दिगम्बराचार्य
श्री 108 सौरभसागर जी महाराज

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।
श्री धरसेनाचार्य देव पुष्पदन्त एवं भूतबलि मुनिवरों
को षट्खण्डागम का उपदेश देते हुए।

श्री नवग्रह जिनदेव विधान

रचयिता

दिगम्बराचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज

कृति	:	**श्री नवग्रह जिनदेव विधान**
शुभाशीष	:	पुष्पगिरि प्रणेता परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 पुष्पदंतसागर जी महाराज
कृतिकार	:	परम पूज्य आचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज
संस्करण	:	पंचम, दिसम्बर 2025 (1000 प्रतियाँ)
प्रकाशक	:	सौरभांचल प्रकाशन (क्र. 117)
प्राप्ति स्थल	:	1. **श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र,** पुष्पगिरि, सोनकच्छ, जिला देवास (म.प्र.) फोन : 07270-22870 2. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थ सौरभाँचल,** श्री श्रुत स्कन्ध मन्दिर जी.टी. करनाल रोड, गन्नौर (हरियाणा) 3. **श्री दिगम्बर जैन मंशापूर्ण महावीर क्षेत्र जीवन आशा हॉस्पिटल** कावड़ मार्ग, गंगनहर, मुरादनगर (गाजियाबाद)
मूल्य	:	रु. 60/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली मो.: 9811374961, 9811363613 pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो" एक ऐतिहासिक सत्य

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

जैन धर्म में देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा ही सम्यग्दर्शन में कारण है। चौबीस तीर्थंकर एवं 1452 गणधर तथा द्वादशांगमय श्रुतज्ञान होने के उपरांत भी वर्तमान काल में तीर्थंकर महावीर स्वामी का शासन काल होने के कारण मंगल स्वरूप वे ही हैं इसलिए **"मंगलं भगवान् वीरो"** कहकर **"दीपावली पर्व"** को महत्व दिया जाता है तथा उनके प्रथम गणधर गौतम स्वामी की दीक्षा की स्मृति को **"मंगलं गौतमो गणी"** कहकर **"गुरु पूर्णिमा"** के रूप में महत्व दिया जाता है तथा 633 वर्ष बीतने के उपरांत श्रुत विच्छेद न हो जाये इसलिए मंत्र ज्ञाता धरसेनाचार्य ने अपना अंग श्रुतज्ञान आचार्य पुष्पदंत स्वामी को समर्पित किया और कहा भी है–

जयउ धरसेण णाहो जेण महाकम्म पयडि पाहुड सेलो।
बुद्धि सिरेणुद्धरियो समप्पियो पुप्फदंतस्स।।
(ध.पु.भा.-2)

अर्थात् वे धरसेन स्वामी जयवंत हों, जिन्होंने **महाकर्मप्रकृति** प्राभृत रूपी पर्वत को अपनी बुद्धिरूपी मस्तक पर धारण करके **आचार्य पुष्पदंत** को समर्पित किया।

उनसे शिक्षित शिष्य **आचार्य पुष्पदंत** ने **सर्वप्रथम णमोकार मंत्र** को निवद्ध मंगल कर षट्खण्डागम ग्रन्थ लिखना प्रारंभ किया एवं गणधर वलय मंत्र के साथ स्वामी भूतबलि आचार्य ने ग्रन्थ पूर्ण किया। इस उपलक्ष्य में **"श्रुतपंचमी"** पर्व मनाया जाता है यही ऐतिहासिक सत्य है इसलिए शुद्ध ग्रन्थ के प्रथम लेखक के रूप में **ऋषि सभा के अधिपति आचार्य पुष्पदंत स्वामी** का स्मरण करते हुए **"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो"** कहा जाता है।

ये तीनों ही जैनधर्म के उत्कृष्ट मंगल स्वरूप हैं। इसलिए धवलाकार वीरसेन स्वामी ने कहा–

"तदो मूलतंत कत्ता वद्ढ्ढमाण भडारयो, अणुतंत कत्ता गौदम स्वामी उवतंत कत्तारा भूदबली पुप्फदंताद्यो वीयराय दोष मोहा मुणिवरा"
(ध.पु.भा.-1, पृ:73)

अर्थात् मूलग्रंथ कर्ता वर्द्धमान भट्टारक अणुतंत कर्ता गौतम स्वामी, उपतंत ग्रंथ कर्ता भूतबलि पुष्पदंतादि, वीतराग दोष मोह रहित मुनिवर हैं।

इसे ही शुद्ध दिगम्बर आगम प्रमाणानुसार निम्न श्लोक के रूप में कहा जाता है–

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

वृहत् शान्तिधारा पाठ

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्-रत्नत्रयरूपाय दिव्यतेजोमूर्त्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणसहिताय, अनन्तचतुष्टयसहिताय, समवसरण-केवलज्ञान-लक्ष्मीशोभिताय, अष्टादश-दोषरहिताय, षट्-चत्वारिंशद्-गुणसंयुक्ताय, परमेष्ठि-पवित्राय, सम्यग्ज्ञानाय स्वयम्भुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय, अनंत-संसार- चक्रप्रमर्दनाय अनन्तज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे उपसर्गविनाशनाय घातिकर्मक्षयंकराय अजराय अभवाय अस्माकं (अमुक राशिनामधेयानां) व्याधिं घ्नन्तु। श्री जिनाभिषेकपूजन प्रसादात् अस्माकं सेवकानां सर्वदोष, रोग, शोक, भय, पीड़ा, विनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष, दोष, कल्मषाय, दिव्य-तेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्न, प्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय सर्वारिष्ट, शान्ति, कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वविघ्न-शान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु-कुरु स्वाहा।

मम कामं शान्तिं-शान्तिं। रतिकामं शान्तिं-शान्तिं। बलिकामं शान्तिं-शान्तिं। क्रोधं-पापं-वैरं च शान्तिं-शान्तिं। अग्निवायुभ्यं शान्तिं-शान्तिं। सर्वशत्रु-विघ्नं शान्तिं-शान्तिं। सर्वोपसर्गं शान्तिं-शान्तिं। सर्वविघ्नं शान्तिं-शान्तिं। सर्वराज्य दुष्टभयं शान्तिं-शान्तिं। सर्वचौर दुष्टभयं शान्तिं-शान्तिं। सर्व-सर्प-वृश्चिक-सिंहादिभयं शान्तिं-शान्तिं। सर्वग्रहभयं शान्तिं-शान्तिं। सर्वदोषं व्याधिं डामरं च शान्तिं-शान्तिं। सर्वपरमंत्रं शान्तिं-शान्तिं। सर्वात्मघातं परघातं च शान्तिं-शान्तिं। सर्वशूल कुक्षि अक्षि शिरो ज्वररोगं शान्तिं-शान्तिं। सर्वनरमारिं शान्तिं-शान्तिं। सर्वगजाश्व गौ-महिष-अजमारिं शान्तिं-शान्तिं। सर्वसस्य-धान्य-वृक्ष-लता-गुल्म-पत्र-पुष्प-फलमारिं शान्तिं-शान्तिं। सर्वराष्ट्रमारिं शान्तिं-शान्तिं। सर्वक्रूर-वेताल डाकिनी-भयानि शान्तिं-शान्तिं। सर्वापस्मारिं शान्तिं-शान्तिं। अस्माकं सर्व अशुभकर्म-जनित-दुःखानि शान्तिं-शान्तिं। दुष्टजनकृतान्-मंत्र-तंत्र-दृष्टि-मुष्टि-छल-छिद्रदोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्वदुष्ट-देव-दानव-वीर-नर-नाहर-सिंह-योगिनी-कृत-दोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्व-अष्टकुली-नागजनित-विषभयानि शान्तिं-शान्तिं। सर्वस्थावर जंगम वृश्चिक सर्पादिकृत-दोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्वसिंहाष्टा-पदादि कृतदोषान शान्तिं-शान्तिं।

परशत्रुकृत-मारणोच्चाटन-विद्वेषण-मोहन-वशीकरणादि कृतदोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्व कर्माष्टकं शान्तिं-शान्तिं। ॐ ह्रीं अस्मभ्यं चक्र-विक्रम-सत्त्व-तेजो-बल-शौर्य-वीर्य-शान्तीः पूरय पूरय। सर्वजीवानंदनं कुरु कुरु जनानंदनं कुरु कुरु भव्यानंदनं कुरु कुरु सर्व गोकुलानंदनं कुरु कुरु। सर्वराजानंदनं कुरु कुरु। सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटंब-पतन-द्रोणमुख-संवाहनानंदनं कुरु कुरु। सर्वानंदनं कुरु कुरु स्वाहा।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेममारोग्यं, स्वस्तिरस्तु विधीयते।।

श्रीशान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। सर्व जीव कल्याण मस्तु। शुभ अस्तु। सुकीर्ति रस्तु। सर्व रोग शोक पीड़ा विनाशनं भवतु। सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्र वृद्धि रस्तु। अस्माकं तुष्टि। पुष्टि। समृद्धिरस्तु। सुखमस्तु। दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्र धनानि सदा सन्तु। सद्धर्म श्रीबलायुरारोग्यै- श्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज पूजित सुरराय॥
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद शीश झुकायें॥

ॐ ह्रीं श्रीं *वृषभादि वीरान्तरेभ्यः शान्तये शान्तिधारा स्वाहा।*
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं *इति* ह्रौं सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीर जिनेद्राय नमः रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।
ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।
सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः।।

अर्घ

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले जिनगृहे अभिषेकमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वर्धमानपर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो महाशांतिधाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय पाठ

इह विधि ठाडो होयके, प्रथम पढै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥1॥
अनंत चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥2॥
तिहुँ जग की पीड़ा-हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥3॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥4॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥5॥
मैं वंदौ जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछू उपाय॥6॥
भविजन को भवकूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार॥7॥
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल॥8॥
तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥9॥
चक्री खगधर इंद्रपद, मिलै आपतैं आप।
अनुक्रम ते शिवपद लहैं, नेम सकल हनि आप॥10॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥11॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥12॥
थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥13॥
रागसहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥14॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥15॥
तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥16॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥17॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥18॥
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूबो जात हो, नेक निहार निकार॥19॥
जो मैं कहहूँ औरसों, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार॥20॥
वन्दों पाँचों परम गुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥21॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमगसाधक साधु नमि, रच्यो पाठसुखदाय॥22॥
मंगल मूर्ति परमपद, पंचधरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥23।
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंतदेव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दौं स्वयमेव॥24।
मंगल आचारज मुनि मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दौं मन वच काय॥25॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥26॥
या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह भवसागर दृढ़ पोत॥27॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत् (नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

मंगल कलश स्थापना

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदंताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।
ॐ जय! जय!! जय!!! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

1. **सर्वप्रथम शुद्ध जल से स्वयं को एवं हाथों को शुद्ध करें–**
   ॐ ह्रीं असुजर सुजर भव स्वाहा।
2. **तत्पश्चात् जल से भूमि शुद्धि करें–**
   ॐ ह्रीं भूः शुद्धयतु स्वाहा।
3. **सकलीकरण करें–**
   ॐ ह्रां णमों अरिहंताणं मम शीर्ष रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रीं णमों सिद्धाणं मम मस्तक रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रूं णमों आयरियाणं मम हृदय रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रौं णमों उवज्झायाणं मम नाभि रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रः णमों लोए सव्वसाहूणं मम पादौ रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
4. **अक्षत् चावल लेकर जमीन पर (जहाँ पर कलश स्थापित करना हो वहाँ) स्वास्तिक बनावें।**
   ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणे नमो नमः स्वास्ति-2 जीव-2 नन्द-2 वर्द्धस्य-2 विजयस्व-2 अनुशाधि-2, पुनीहि-2 पुण्याहं-2 मांगल्यं मांगल्यं पुष्पाञ्जलि। **(पुष्प क्षेपण करें)**
5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमो अर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन मंगल कलशं स्थापितं करोमि स्वाहा। **(यह मंत्र पढ़कर कलश स्थापित करें।)**
   अपनी जाति, गौत्र, दादा, पिताजी, माताजी, स्वयं, पत्नी, बच्चों का नाम तथा सम्वत्, माह, पक्ष, तिथि, वार, बोलकर कलश स्थापित करें कलश में 5 हल्दी, 5 सुपाड़ी, पीली सरसों, सबा रुपया, धनिया आदि मांगलिक वस्तुएं डाले।
6. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अत्र स्थाने विराजित क्षेत्रपाल देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः ठः स्थापना इदं अर्घं समर्पयामि। **(नैवेद्य पुष्प आदि अर्घ चढ़ायें)**
7. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अत्र स्थाने विराजित सर्व वास्तु देवा आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः ठः स्थापना इदं अर्घं समर्पयामि। **(अर्घं समर्पण करें)**

8. ॐ ह्रीं आँ क्रौं वायु कुमार देवाय अत्र स्थाने वायु शुद्धि कुरू-कुरू ह्रूँ फट् स्वाहा। **(हाथों से हवा करें अर्घ समर्पयामि)**
9. ॐ ह्रीं आँ क्रौं मेघ कुमार देवाय अत्र स्थाने भूमिं शुद्धि कुरू-कुरू अँ हँ सँ वँ क्षँ ठँ क्षः फट् स्वाहा **(अर्घं समर्पयामि)**
10. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अग्नि कुमार देवाय भूमि ज्वलय-2 फट् स्वाहा। **(कपूर जलावें) (अर्घं समर्पयामि)**
11. ॐ ह्रीं आँ क्रौं षष्टिसहस्त्र संख्येभ्यो नागकुमार देवाय जलात्रजलि स्वाहा। **(जलं अर्घं समर्पयामि)**
12. ॐ ह्रीं आँ क्रौं इन्द्र, आग्ने, यम, नैऋत्य, वरूण, पवन, कुबेर, ईशान, सोम, घरणेन्द्र दिग्पाल देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**
13. ॐ ह्रीं आँ क्रौं पंचदश तिथि देवता आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**
14. ॐ ह्रीं आँ क्रौं आदित्य चन्द्र-मंगल बुध-गुरू शुक्र-शनि राहु-केतु नवग्रह देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**
15. ॐ ह्रीं नमोऽर्हदभ्यो पंच परमेष्ठिभ्यो: नमः। **(अर्घं)**
16. ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्त चतुर्वीस तीर्थंकरेभ्यो: नमः। **(अर्घं)**
17. ॐ ह्रीं वृषभसेनादि गौतमान्त गणधरेभ्यो: नमः। **(अर्घं)**
18. ॐ ह्रीं मम कुल गुरूवे नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**
19. ॐ ह्रीं आँ क्रौं गौमुखादि चतुर्विंशति यक्षादि देवाय अर्घं समर्पयामि।
20. ॐ ह्रीं आँ क्रौं चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावति आदि चतुर्विंशति यक्षी देवाय नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**
21. ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं धृति कीर्ति बुद्धि शान्ति पुष्टि लक्ष्मी देवीभ्यो नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**
22. मम कुल गृह देवो जिनेश्वरो तीर्थंकरो गधधर गुरूओं, मम गुरू भक्ति प्रसादात् प्रसन्नो भवतु मम कुल (जाति) गोत्र का नाम स्मरण करें मम् धन धान्य पुत्र पौत्रादिक सौख्यं शांतिं पुष्टिं आरोग्यं अक्षीणं भवत् स्वाहा।
23. **बीजाक्षर मंत्रों से सज्जित, मंगल कलश महान है।**
शुभ संकल्पों का दाता यह, कल्प वृक्ष समान है।।
हो विधान पूजा शुभ कारज, कलश क्लेश सब दूर करें।
अर्घावली मंत्रों को अर्पित, सुख शांति भरपूर करें।।
ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं बीजाक्षर युक्त कलश यन्त्राय नमः अर्घम् निर्वापामीति स्वाहा।
24. कलश के सामने दीप धूप कर इष्ट देव की स्तुति करें। अर्घ चढ़ाकर पुनः क्षमा याचना कर विसर्जन करें।

अर्घ-मंशापूर्ण महावीर स्वामी

श्रद्धा का जल कर में लेकर भक्ति का चन्दन लाया
अक्षत कुसुम चरूवर पावन दीप धूप वन्दन भाया
सिद्ध शिला फल चाह लिये मैं अष्ट द्रव्य चढ़ाऊँगा
श्री मंशापूरण महावीर की पूजा कर सुख पाऊँगा

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया।।
तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा

तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिनका भेष।।

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

अर्घ-आचार्य श्री सौरभ सागर जी

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन शृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय! जय!! जय!!! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः।।2।।

अपराजित मंत्राऽयं, सर्व विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः।।3।।

एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलं।।4।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।

कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।6।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण-पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनसहस्रनाम का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले-जिनगृहे-जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिन-अष्टाधिक-सहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले-जिनगृहे-जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद-नायकमनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष-मयाऽभ्यधायि॥1॥
स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।

स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय॥2॥
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक विततैक चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल सकलायत विस्तृताय॥3॥
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरुपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥4॥
अर्हन्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥5॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति विधान

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

॥इति श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर-स्वस्ति-मंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि॥

परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥1॥

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥3॥

प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥4॥

जंघा-नल-श्रेणि-फलाम्बु-तंतु, प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण स्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥5॥

अणिम्नि दक्षाः कुशलाः महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपूर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥6॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥7॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणंचरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥8॥

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी र्विषाविषा दृष्टि-विषा विषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयो नः॥9॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधु-स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्शयो नः॥10॥

॥इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि॥

''देव-शास्त्र-गुरु-जिनतीर्थ-अकृत्रिम तीर्थ तीस चौबीसी विद्यमान 20 तीर्थंकर-निर्वाण भूमि'' की समुच्चय पूजन *

(जैनाचार्य श्री सौरभ सागर जी महाराज द्वारा रचित)

परम् देव अरिहंत सिद्ध गुरु, आचारज साधु उवज्झाय।
माँ जिनवाणी बीस जिनेश्वर, विद्यमान तीर्थंकर ध्याय।।
तीर्थंकर मुनि मोक्ष भूमि अरुँ, अकृत्रिम जिन वंदन है।
तीस चौबीसी तीर्थंकर का, आह्वाहन स्थापन है।।

ॐ ह्रीं अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु पंचपरमेष्ठी समूह-द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह-अकृत्रिम जिन बिम्ब समूह-तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह-अत्र अवतर अवतर-अत्र तिष्ठ-तिष्ठ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

जल

जल जीवन रक्षित करता है, शांत स्वभावी सरल तरल।
चरणों में जल अर्पित करता, पाने को शुभ मोक्ष महल।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह-द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह-अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय **जलं** निर्वपामीति स्वाहा।

---

*कभी-कभी समय की अल्पता के कारण आराधना के तीव्र भाव उत्पन्न होते हैं उन सभी आराधना चाहने वालों के लिए आचार्यश्री ने महाउपकार करके एक साथ "पंच परमेष्ठी, माँ जिनवाणी, विद्यमान बीस तीर्थंकर, अढाई द्वीप, सम्पूर्ण निर्माण भूमि, अकृत्रिम जिनबिम्ब (प्रतिमा) एवं तीस चौबीसी" की समुच्चय पूजा की रचना की है।

चंदन

ताप विनाशक तन का चंदन, पूज्य चरण में लें आया।
क्रोध द्वेष प्रतिशोध त्यागकर, शीतल सुरभित गुण गाया।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह संसार ताप विनाशनाय **चंदनं** निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

सिद्ध शिला का वासी आतम, पापी बन भव घूम रहा।
त्रय योगों को स्थिर करके, द्रव्य चढ़ा मन झूम रहा।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अक्षय पद प्राप्ताय **अक्षतं** निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम भोग का रोग भयंकर, मन बगियाँ में खिलता हैं।
वैरागी प्रभु के सम्मुख आ, काम भाव सब मिटता हैं।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह कामबाण विनाशनाय **पुष्पं** निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

पतितोद्धारक आप निराकुल, क्षुधारोग से पीड़ित हूँ।
धर्म ध्यान की औषध पाकर, भक्ति भाव से जीवित हूँ।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह क्षुधा रोग विनाशनाय **नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मिथ्या भाव का महा तिमिर प्रभु, काल अनादि से भीतर।
तव दर्शन की शुभ्र दीप से, ज्योतिर्मय आतम अंदर।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह मोहांधकार विनाशनाय **दीपं** निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

तव चरणों की धूपायन में, कर्म धूप खेनें आया।
धर्म गंध चारों दिश फैले, मन पूजा कर हर्षाया।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अष्ट कर्म विनाशनाय **धूपं** निर्वपामीति स्वाहा।

फल

भक्ति भाव की दिव्य तरु में, चढ़कर रत्नत्रय पाऊँ।
जिन गुण फल आतम में प्रगटे, सिद्धालय में रम जाऊँ।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह मोक्षफल प्राप्ताय **फलं** निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

अष्ट द्रव्य का अर्घ थाल लें, श्रद्धा से अर्पित करता।
है अनर्घ पद पावन तेरा, पाने मन उलसित होता।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय **अर्घम्** निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

पंचपरम गुरु परमेष्ठी हैं, पूज्य पुरुष अरिहंत मुनि।
सिद्ध निरामय निराकार हैं, अष्ट कर्म के कष्ट हनि।।1।।

आचारज उवज्झाय साधुगण, ज्ञानध्यान तप लीनयति।
णमोकार नित जपकर करता, चरण वंदना जैनमति।।2।।

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व प्रभो
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांश पद, वासु विमलानन्त नमो।।3।।

धर्म शान्ति कुन्थु अरनाथा, मल्लि मुनिसुव्रत नमि जपूं।
नेमी पारस महावीर जी, वर्तमान चौबीसी भंजू।।4।।

तीर्थराज सम्मेद शिखर जी, अष्टापद पावा गिरनार।
चम्पापुर सह ढाई द्वीप की, मोक्ष भूमि बन्दूँ शतवार।।5।।

सीमंधर से अजितवीर्य तक, विद्यमान श्री बीस जिनेश।
क्षेत्र विदेह में देह रहित हो, हरते सारे कर्म क्लेश।।6।।

आठ कोटि अरुँ छप्पन लक्षा, सत्तावन हज्जार कहें।
चार शतक इक्यासी प्रतिमा, नमन उन्हें शतवार करें।।7।।

जिनप्रतिमा अकृत्रिम जग में, दिव्य रूप है वृहद विशाल।
ऊर्ध्व अधो अरुँ मध्य लोक के, जिन प्रतिमा बन्दूँ त्रयकाल।।8।।

ऐरावत और भरत क्षेत्र के, तीर्थंकर गुणगान करूँ।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीस चौबीसी ध्यान धरूँ।।9।।

प्रभु पूजन दर्शन वंदन से, निद्धत निकाचित कर्म कटें।
अनुपम आत्मिक अव्यय सुख का, सूरज निज आतम प्रगटे।।10।।

दिव्य ध्वनि की निर्मल वाणी, माँ जिनवाणी कहलाती।
दिव्य ज्ञान दे अन्तर्मन की, कल्मषता सब धो जाती।।11।।

परमेष्ठी जिनवाणी माता, क्षेत्र विदेह के बीस जिनेश।
सिद्ध भूमि अकृत्रिम प्रतिमा, तीस चौबीसी के तीर्थेश।।12।।

देव शास्त्र गुरु तीरथ भूमि, तीर्थंकर को सदा नमूँ।
अर्घावली चरणों में देकर, शुद्धातम को सदा भजूँ।।13।।

दोहा- कर्म रहित जिनदेव की, भक्ति करे कल्याण।
"सौरभसागर" नित नमें, पाने शाश्वत धाम।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह जयमालाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- परमेष्ठी श्रुत बीस जिन, तीस चौबीसी ध्याय।
अकृत्रिम जिनराज भज, सिद्ध भूमि सिर नाय।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री नवग्रह जिनदेव विधान

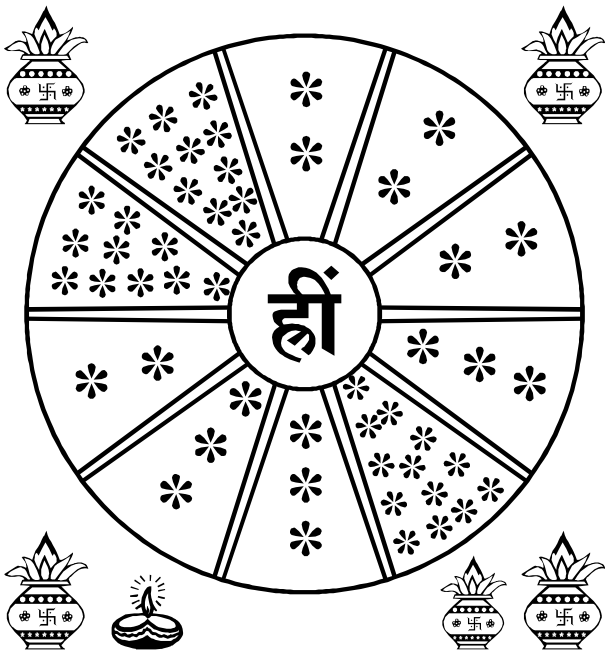

पूर्णार्घ्यं 10, महार्घ्यं 1 = कुल अर्घ्य 62

प्रथम वलय 3, द्वितीय वलय 3, तृतीय वलय 2, चतुर्थ वलय 10, पंचम वलय 11

षष्टम वलय 2, सप्तम वलय 2, अष्टम वलय 2, नवम वलय 3, दशम वलय 13

श्री नवग्रह जिनदेव व्रत विधि

व्रतारम्भ : स्वयं के जन्म वार-ग्रह पीड़ा वार या तद् जिनदेव जन्म कल्याणक तिथि

अवधि : 9-माह 9-वर्ष अथवा जितने वर्ष की ग्रह दशा हो। सप्ताह में करें तो प्रत्येक वार, माह में करें तो तिथि अनुसार।

व्रतपूजा : गृह निवारक जिनेन्द्र देव की पूजा-विधान।

जाप : पेज नं 46-47 पर देखें।

व्रत विधि : अभिषेक शांतिधारा करें या देखें, एकासन उपवास–चार रस त्याग या सात्विक तद्वर्ण खाद्य वस्तु त्याग।

श्री नवग्रह जिनदेव विधान

स्थापना

जय तीथङ्कर आत्म हितंकर, पद्म चन्द्र प्रभु जिनराज।
पुष्पदन्त जय वासुपूज्य जय, शान्तिनाथ जी जग सरताज।।
आदिनाथ जय मुनिसुव्रत जय, नेमि पारस ध्यान धरूँ।
आह्वानन स्थापन करके, गृह कर्म दोष अवसान करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः अत्र मम सन्निहतो भव भव वषट् सन्निधकरणम्।

जल

सिद्धक्षेत्र की पावन भूमि, से निर्मल जल ले आउँ।
श्री जिनवर के चरण पूजकर, जन्मजरा मृत विनशाउँ।।
आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय।।

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

आत्म वृक्ष चंदन सम सुरभित, अष्टकर्म के नाग पले।
भक्ति मोर का दिव्य नाद सुन, आत्मवृक्ष को छोड़ चले।।

आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय॥

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः भव-ताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥

अक्षत

श्वेत वर्ण मोती सम उज्ज्वल, अक्षय अक्षत लाए हैं।
सिद्धालय पा जाएँ भगवन, अक्षत चरण चढ़ाए हैं॥
आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय॥

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः अक्षय-पद-प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

मन उपवन की क्यारी से कुछ, भक्ति सुमन चुन लाया हूँ।
चरण कमल की सौरभ पाने, पुष्प चढ़ा हर्षाया हूँ॥
आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय॥

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः कामवाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

क्षुधा वेदिनी महाडाकिनी, सदा पाप करवाती है।
चरण कमल नैवेद्य चढ़ाऊँ, भव संताप मिटाती है॥

आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय॥

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

ना बाती ना घृत का दीपक, फिर भी त्रिभुवन उजियारा।
केवल ज्ञान की ज्योति अनुपम, दूर भगाती अंधियारा॥
आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय॥

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

धूपायन में धूप समर्पित, कर्म धुम्र मेटो स्वामी।
पाप ताप संताप मिटाओ, त्रिभुवन के अन्तर्यामी॥
आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय॥

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

फल की इच्छा सभी कार्य में, सब प्राणी को होती है।
पूजा का फल मोक्ष महाफल, यही भक्ति की ज्योति है॥
आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय॥

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः मोक्ष-फल-प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प दीप, नैवेद्य धूप फल लाए हैं।
ग्रहकर्म दोष मेटो सारे प्रभु, चरणन अर्घ चढ़ाए हैं॥
आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय॥

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **नवग्रहों के भवन में, अकृत्रिम जिनदेव।**
एक सो दश योजन बसें, नवग्रहों के देव॥

(मण्डलस्योपरि-पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रथम वलय

(सूर्य ग्रह अरिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु अर्घ्यावली)

दोहा– **मेरु पर्वत परिक्रमा, देव लगाते नित्य।**
अढाई द्वीप के ज्योतिषी, देव पाँच हैं सत्य॥
(प्रथम-वलय-मण्डलस्योपरि-पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आतम ध्यानी महा विरागी, पदम प्रभु जिनराज महान।
बंधन कुंजर देख सके ना, धारा मुनिव्रत कर्मन हान॥
जन्म राशि अक्षांश समय से, कर्म उदय आ कष्ट दिए।
सूर्य ग्रह के दोष सतावे, पदम प्रभु जप नष्ट किए॥1॥

ॐ ह्रीं सूर्यग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-पद्मप्रभुजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मान मिले ना सफल कार्य ना, जनक सदा दुख पाते हैं।
राज कृपा ना सूर्य दोष से, जीवन में पा पाते हैं॥
पदम प्रभु का जाप करूँ नित, जन्मदाता सम्मान करूँ।
सूर्य ग्रहों का दोष निवारे, सिद्ध प्रभु का ध्यान धरूँ॥2॥

ॐ ह्रीं सूर्यग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-पद्मप्रभुजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भरत चक्री भी प्रातः उठकर, महलों के छत पर जाता।
उगते सूरज में अकृत्रिम, जिन प्रतिमा दर्शन पाता।।
सूर्य ग्रहों का दोष टालने, पूर्वाभिमुख जाप करें।
जिन प्रतिमा प्रक्षालन वन्दन, करके सारे पाप हरें।।3।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रह-अरिष्टनिवारक सूर्यविमानस्थित-अकृत्रिम-सिद्ध-परमेष्ठी-प्रतिमा सह-श्री-पद्मप्रभुजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

अपनी शक्ति अपनी क्षमता, अपने कर्मों का भुगतान।
अपने द्वारा अर्जित है जो, अपने को ही हो फलवान।।
अपने को जाने समझे हम, अपनों से अपनापन हो।
पद्म प्रभु सा पद्म खिलाऊँ, आत्म सूर्य का दर्शन हो।।

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः सूर्यमहाग्रह-सर्व-अरिष्टग्रह-रोगकष्टनिवारणं कुमुलयक्ष-मनोवेगायक्षी-सेविताय श्री-पद्मप्रभुतीर्थंकराय नमःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलय

(चन्द्र ग्रह अरिष्ट निवारक श्री चन्द्र प्रभु अर्घ्यावली)

दोहा– **चंद्र सूर्य की गतिविधि, जाने भूत भविष्य।**
महा निमित्तक ज्ञान है, अनुमानों का सत्य।।

(द्वितीय-वलय-मण्डलस्योपरि-पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

बादल छटता देख चंद्र ने, क्षणभंगुर जग को जाना।
लोकांतिक शिविका ले आये, दीक्षा वन ले मुनि बाना।।
चंद्र नाथ की चंद कृपा से, चंद्र दोष सब टल जाएँ।
चंद्रप्रभु अरिहंताणं जप, सर्व दोष मम गल जाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-चन्दप्रभुजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन अस्थिर भावुक हो जावे, माता कष्ट सदा पावे।
चंद्र ग्रहों के दोष मिटाने, चंद्रप्रभु को नित ध्यावे।।

श्वेत वर्ण के चंद्रप्रभु को, हृदय कमल मस्तक धारें।
अरिहंताणं मोती माला, चंद्र दोष झटपट टारे॥2॥

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-चन्दप्रभुजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चंद्र बिंब तो सिद्ध शिला का, चंद्राकार प्रतीक कहा।
अकृत्रिम प्रतिमा सिद्धों की, ध्यान लगा मन शांत महा॥
घटता बढ़ता जीवन का क्रम, मन स्थिरता न ही तजें।
रोग शोक भय भोग भगावे, चंद्र दोष भी शीघ्र टलें॥3॥

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रह-अरिष्टनिवारक चन्द्रविमानस्थित-अकृत्रिम-सिद्ध-परमेष्ठी-प्रतिमा सह-श्री-चन्दप्रभुजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

ग्रह बाधा से डरे नहीं मन, कर्मोदय का भान रहे।
निर्मल मन से परमेष्ठी भज, अग्रज का सम्मान करें॥
स्त्री का अपमान करे ना, पर धन पर ना दृष्टि हो।
व्यसनों से मन बचा रहे और, चन्द्रप्रभु नित भक्ति हो॥

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः चन्द्रमहाग्रह सर्व-अरिष्टग्रह-रोगकष्ट निवारणं विजययक्ष-ज्वालामालिनीयक्षी-सेविताय श्री-चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय

(मंगल दोष निवारक श्री वासुपूज्य भगवान अर्घ्यावली)

दोहा- **गणित फलित दो जानिए, ज्योतिष विद्या रूप।**
जन्म भाग्य पुरुषार्थ से, बने रंक या भूप॥
(तृतीय-वलय-मण्डलस्योपरि-पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

वासुपूज्य जिन बाल ब्रह्म हैं, लाल वर्ण गहरा पाया।
मंगल दोष निकट ना आवे, निश्चल मन से जो ध्याया॥

प्रतिशोध का भाव जगे ना, समता मय जीवन पाऊँ।
चरणों में शुभ अर्घ्य समर्पित, सिद्ध प्रभु को नित ध्याऊँ॥1।

ॐ ह्रीं मंगलग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्तिम आभा मंगल की जो, क्रोधी पापी बना रहा।
मन घबरावे कार्य घटावे, शुभ में बाधा सदा रहा॥
वासुपूज्य की मूँगे माला, सिद्धाणं की जाप करें।
मंगल ग्रह के दोष निवारण, ब्रह्मचर्य ले ताप हरें॥2॥

ॐ ह्रीं मंगलग्रह-अरिष्टनिवारक मंगलग्रह विमानस्थित-अकृत्रिम-सिद्ध-परमेष्ठी-प्रतिमा सह श्री-वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

मंगल ग्रह में कर्म दोष बलि, उसे नाशने करूँ जतन।
वासुपूज्य जिन परमेष्ठी की, नित्य करूँ प्रातः वंदन॥
मात-पिता वृद्धों की सेवा, भ्राता भगिनी प्रेम रखूँ।
अतिथि हो या वक्त का मारा, सबका मंगल सदा चहूँ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः मंगलमहाग्रह सर्व-अरिष्टग्रह-रोगकष्ट-निवारणं षण्मुखयक्ष-गांधारीयक्षी-सेविताय श्री-वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय

(बुध ग्रह अरिष्ट निवारक अष्ट जिनदेव अर्घ्यावली)

दोहा– **आदिनाथ महावीर जिन, जैन धर्म सरताज।**
मिथ्या तज सम्यक भजे, भव्य जीव जिनराज॥

(चतुर्थ-वलय-मण्डलस्योपरि-पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चक्रवर्ती तीर्थंकर पद पा, कामदेव से सुंदर थे।
वैभव रूप धरम पाकर भी, निज आतम के अंदर थे॥

शांति नाथ सह उपाध्याय की, जाप हरें बुध ग्रह पीड़ा।
जन्म कुंडली दोष निवारे, शांतिनाथ नित जप धीरा।।1।।

ॐ ह्रीं बुधग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-शांतिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी चंचल हो अशुद्ध या, रिश्ते से ना बढ़े मिलाप।
बुद्धि विकृत बुध ग्रह कारण, शांतिनाथ की नित कर जाप।।
हित मित प्रिय वाणी हो मधुरिम, शांत रहें बुध गृही विकार।
हरित वर्ण की माला फेरें, शांतिनाथ की कर जयकार।।2।।

ॐ ह्रीं बुधग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-शांतिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काम करे इज्जत ना पावे, सब कुछ है पर मान नहीं।
बुधग्रह पीड़ा देता रहता, अवसर पर बहुमान नहीं।।
विमल अनंत धर्म जिन शांति, कुंथु अरह का ध्यान करूँ।
नमिनाथ श्री वर्धमान जप, बुध दोष अवसान करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं बुधग्रह-अरिष्टनिवारक बुधग्रहविमानस्थित-अकृत्रिम-सिद्ध-परमेष्ठी-प्रतिमा सह श्री-विमलनाथ-अनन्तनाथ-धर्मनाथ-शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ, नमिनाथ-वर्धमानजिनेन्द्राय नमः अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ भगवान

दुख के काले बादल छाये, या सुख की बौछारें हो।
दोनों क्षण समता को धारूँ, जीवन स्थिर सारे हो।।
विमलनाथ सम विमल बुद्धि कर, अमल विमल गुणवन्त रहें।
कर्मातीत करे जिन दर्शन, विमलनाथ भगवंत कहे।।4।।

ॐ ह्रीं बुधग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-विमलनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतनाथ भगवान

क्षण भंगुर जीवन वैभव पर, वर्षों तक स्थिर रहता।
सुख दुख हानि लाभ दिखाकर, जीवन क्रम हर क्षण चलता।।

काल अन्नतों बीत चुके प्रभु, भटक भटक कर हे स्वामी।
अंत करो भव भटकन जिनवर, अनंतनाथ शिवपथ गामी॥5॥

ॐ ह्रीं बुधग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-अनन्तनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ भगवान

धर्मनाथ जिन शरणा पाकर, दूर करें सब पाप विकार।
वस्तु का स्वरूप जानकर, धर्म करें तज बाह्य विचार॥
भक्ति मिली जिनदेव आपकी, भाग्य मेरा बलवान हुआ।
सद् बुद्धि सन्मार्ग मिला है, स्वयं बोध सम्मान हुआ॥6॥

ॐ ह्रीं बुधग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-धर्मनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुंथुनाथ भगवान

चौदह रत्नों के स्वामी थे, कामदेव का रूप मिला।
तीर्थंकर पदवी के धारी, तन सुख मन अनुरूप खिला॥
मेरा भाग्य जगा दो जिनवर, भक्ति का फल मुक्ति मिले।
चंचल मन स्थिर हो जाये, ऐसी अदभुत शक्ति मिले॥7॥

ॐ ह्रीं बुधग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-कुन्थुनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ भगवान

अरहनाथ अरिदमन करन को, संन्यासी बन वन पहुँचे।
त्याग साधना सघन विपिन में, कर्म नशे आतम चमके॥
मन कितना कमजोर मेरा प्रभु, दुख पाकर ही मचल गया।
अरहनाथ तेरी शरणा पा, भक्ति गाकर सँभल गया॥8॥

ॐ ह्रीं बुधग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-अरहनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नमिनाथ भगवान

नयन मनोहर नासा दृष्टि, वीतराग मुद्रा गंभीर।
नमन नशावे दोष ग्रहों का, भक्ति करें जो होके अधीर॥

नीरधार कोमल होकर भी, चट्टानों को तोड़ रही।
भक्ति की निर्मल धारा भी, कर्मशिला को फोड़ रही॥9॥

ॐ ह्रीं बुधग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-नमिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वर्धमान भगवान

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, धर्म ध्वजा फहराया है।
शासन नायक वर्धमान जिन, धर्म भाव विकसाया है॥
वर्धमान के नाम जाप से, बुध ग्रह कृत सब दोष टलें।
भक्ति आराधन नित करता, सुख दुख में संतोष फले॥10॥

ॐ ह्रीं बुधग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-वर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

नवग्रह के सब ज्योतिष देवा, हाथ जोड़कर खड़े रहे।
तीर्थंकर का अतिशय अद्भुत, चरणों मे नित पड़े रहे॥
जन्म राशि गण वर्ण योनि अरुँ, नाड़ी और नक्षत्र मिले।
शान्तिनाथ से अपनी संधि, जोड़ भक्ति सर्वत्र खिले॥

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः बुधमहाग्रह-सर्व-अरिष्टग्रह-रोगकष्टनिवारणं गरुड़ यक्ष महामानसीयक्षी-सेविताय श्री-शांतिनाथजिनेन्द्राय प्रतिमा नमः पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पंचम वलय

(गुरु ग्रह अरिष्ट निवारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र सहित अष्ट जिनदेव अर्घ्यावली)

दोहा– **पुष्परत्न फल धान्य हो, या प्रतिमा तद् वर्ण।**
दोष ग्रहों का टालते, धर्म कृत्य हो संग।

(पंचम-वलय-मण्डलस्योपरि-पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

आदिनाथ भगवान

आदिनाथ जी श्रेष्ठ गुरु हैं, बृहस्पति नित गुण गाये।
गुरु ग्रह पीड़ा नाम जाप से, दूर रहे ना दुख लाये॥

आदर देकर आदर पायें, जो विनम्र व्यवहार करें।
छोटे होकर दिखे बड़प्पन, गुरुजन भी सत्कार करें।।1।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-आदिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

परम गुरु हे प्रथम गुरुदेव, आदिनाथ जिनदेव महान।
असि मसि षट् कर्म जिविका, धर्म ग्रहस्थी पूजा दान।।
श्रावक और श्रमण धर्म का, मार्ग आपने बतलाया।
जगत गुरु हे तीर्थ प्रवर्तक अर्घ चढ़ा मन हर्षाया।।2।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रह-अरिष्टनिवारक प्रथम गुरु श्री-आदिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु कृपा से वंचित रहता, गुरु ग्रह जब पीड़ा देता।
पंच गुरु परमेष्ठी भक्ति, आदिनाथ जप दुख हरता।।
ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमतिनाथ सुपार्श्व जपो।
शीतल और श्रेयांस आठ जिन, नम्रभाव से सदा भजो।।3।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रह-अरिष्टनिवारक गुरुविमानस्थित-अकृत्रिम-सिद्ध-परमेष्ठी-प्रतिमा सह श्री-आदिनाथ-अजितनाथ-संभवनाथ-अभिनंदननाथ-सुमतिनाथ-सुपार्श्वनाथ-शीतलनाथ-श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ भगवान

कर्म विजेता महाप्रभावी, अजितनाथ बहु गुण धारी।
गज चिन्हांकित चतुर्थ काल के, तीर्थंकर है अविकारी।।
तीर्थराज सम्मेद शिखर से, मोक्ष द्वार को खोला है।
गुरु ग्रह पीड़ा हर गरिमामय, गुरु कृपा अनमोला है।।4।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-अजितनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभवनाथ भगवान

जय संभव नाथा गाउ गाथा, कर्म शृंखला अंत करूँ।
शुभ अर्घ चढाऊँ भक्ति गाऊँ, ध्यान लगा अरिहंत वरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-संभवनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अभिनंदननाथ भगवान

जय जय अभिनन्दन-चरणनन् वंदन, क्रंदन कर्म नशाया है।
ग्रहदोष निवारे सुख विस्तारे, श्रद्धाफल सुख पाया है॥6॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-अभिनन्दननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ भगवान

छत्र चँवर भामंडल आदि, आस पास शोभा पाते।
देव शतेन्द्र नमें तव चरणा, पुलकित होकर गुण गाते॥
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, फिर भी हो अंतर्यामी।
सुमतिनाथ तुमको वंदु मैं, सुमति दो मुझको दानी॥7॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-सुमतिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुपार्श्वनाथ भगवान

भक्त जनों के अघ को हरते, उदय अस्त से रहित हुए।
मुनिगण में चंदा सम सोहे, आठ गुणों से सहित हुए॥
चरण कमल तल कमल बिछा है, उसके ऊपर चलते आप।
नाथ सुपारस जय हो तेरी, दूर करो सारे मम पाप॥8॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलनाथ भगवान

ध्यान धुरन्धर दिव्य देवता, शीतल समकित सरवर हो।
मन वांछित फल देने वाले, कल्प वृक्ष सम तरूवर हो॥
मोक्ष मार्ग पर चलुँ निरन्तर, कर्म रहित जीवन कर दो।
शीतल नाथ सदा सुखदायी, शुद्ध चेतना का वर दो॥9॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-शीतलनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांसनाथ भगवान

श्रेष्ठ कार्य का श्रेय मिले तो, श्रेय अंश सबको बाटें।
न गरूर हो गुरु तम गरिमा, गुरु ग्रह पीड़ा सब छाटें॥
श्रेयांसनाथ हितकर तीर्थंकर, निज आश्रय में वास किया।
चरण कमल की नित्य अर्चना, दर्शन ज्ञान प्रकाश दिया॥10॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

सूर्य चन्द्र या राहु केतु, मंगल बुध गुरु ग्रह नाम।
शुक्र शनि ज्योतिष देवा हैं, करते रहते अपने काम॥
तिथि वार नक्षत्र योग अरुँ, करण कहाते हैं पंचांग।
आदिनाथ पंचांग नमो सब, पंच पाप तजकर सर्वांग॥11॥

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः गुरुमहाग्रह-सर्व-अरिष्टग्रहरोगकष्ट-निवारणं गोमुखयक्ष-चक्रेश्वरीयक्षी-सेविताय श्री-आदिनाथजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्टम वलय

(शुक्र ग्रह अरिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत भगवान अर्घ्यावली)

दोहा- **शांति तुष्टि पुष्टि करें, वैभव आयु लाभ।**
भद्र भाग्य वृद्धि सदा, जिन चरणा मन लाग॥

(षष्टम-वलय-मण्डलस्योपरि-पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सुख दाता सब दोष निवारे, कर्म विनाशी श्री भगवान।
पुष्पदंत की जाप करो नित, शुक्र ग्रह पीड़ा की हान॥
जल में रहकर मगरमच्छ से, बैर नहीं करते ज्ञानी।
शुक्रगुजार करो सब जन का, नम्र मिले या अभिमानी॥1॥

ॐ ह्रीं शुक्रग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-पुष्पदंतजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

संबंधों में परेशानी हो, सुख सामग्री नहीं मिले।
वस्तु बिगड़े धन हानि हो, शुक्र ग्रह बलवान खिलें।।
श्वेत वर्ण के पुष्पदंत प्रभु, फटिक जाप से अरिहंता।
नित्य करूँ मैं ध्यान साधना, वस्तु मिले सब सुख वन्ता।।2।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रह-अरिष्टनिवारक शुक्रविमानस्थित-अकृत्रिम-सिद्ध-परमेष्ठी-प्रतिमा सह-श्री-पुष्पदंतजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

भौतिकता की राह पकड़कर, भगवत्ता को भूल गया।
नश्वर वस्तु में रम करके, निज ईश्वर प्रतिकूल गया।।
पुष्पदंत प्रभु आप शरण आ, नव लब्धि को पा जाऊँ।
जग में रहकर जग को तजकर, केवल ज्योति जला जाऊँ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः शुक्रमहाग्रह सर्व-अरिष्टग्रह-रोगकष्टनिवारणं अजितयक्ष-महाकालीयक्षी-सेविताय श्री-पुष्पदंतजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम वलय

(शनिग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रत भगवान अर्घ्यावली)

दोहा- **प्रतिकूल शनि ग्रह हुए, यश धन साथी खोए ।**
अनुकूल शनि पुण्य मयी, मिले गए सब कोय।।

(सप्तम-वलय-मण्डलस्योपरि-पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अपना कर्म प्रभाव भाव ही, शनि पीड़ा वर्धन करता।
मुनिसुव्रत-सा संयम पाले, ग्रह बाधा हर क्षण हरता।।
णमो लोए सव्व साहूणं की, मुनिसुव्रत संग जाप करें।
सादा जीवन रखकर सबके, क्लेश दोष सब माफ करें।1।।

ॐ ह्रीं शनिग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलह रुकावट या दरिद्रता, बीमारी पग की पीड़ा।
कार्य विफलता घर भी ना हो, अपनों ने भी हो छोड़ा॥
मुनिसुव्रत की पूजा धारा, करके सादा जीवन हो।
व्यर्थ कल्पना मिटा शांत मन, निष्कांक्षी नित पावन हो।2॥

ॐ ह्रीं शनिग्रह-अरिष्टनिवारक शनिविमानस्थित-अकृत्रिम-सिद्ध-परमेष्ठी-प्रतिमा सह-श्री-मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

पशु रक्षा सेवा कर सबकी, सादा जीवन शुद्ध विचार।
संतोषी रह उम्र गुजारे, ग्रह दोष का स्वयं निवार॥
लाभ हानि सुख दुख सारे ये, धूप, छाँव से रहते हैं।
उदासीन मन पुलकित करके, मुनिसुव्रत जप जपते हैं॥

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः शनिमहाग्रह-सर्व-अरिष्टग्रह-रोगकष्टनिवारणं वरुणयक्ष बहुरूपिणीयक्षी-सेविताय श्री-मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वलय

(राहु ग्रह अरिष्ट निवारक नेमिनाथ भगवान अर्घ्यावली)

दोहा– **भयकारी राहु महा, छिपा फूल में शूल।**
समता भक्ति धैर्य से, दोष छटे जड़ मूल॥

(अष्टम-वलय-मण्डलस्योपरि-पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

नेमिनाथ जी दया मूर्ति हैं, पशु पीड़ा लख दीक्षा ली।
हिंसक जीव ही राहु जग में, इनसे बचना शिक्षा दी॥
रोगी को औषध देकर के, पक्षी को दाना डालें।
दया भाव सब जीवों पर रख, राहु ग्रह दुख सब टालें॥1॥

ॐ ह्रीं राहुग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-नेमिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धोखा खाना कर्मोदय पर, धोखा देना पाप महा।
पर की हानि गलत संगति, राहु का संताप कहा।।
व्यन्तर बाधा प्रगति रुके तो, अरिष्ट नेमि की जाप करें।
नश्वर जीवन कलह उपेक्षा, अकस्मात सब ताप हरें।।2।।

ॐ ह्रीं राहुग्रह-अरिष्टनिवारक राहुविमानस्थित-अकृत्रिम-सिद्ध-परमेष्ठी-प्रतिमा सह-श्री-नेमिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जिनवर के गुण गाता निशदिन, पर अवगुण ना तज पाता।
गज स्नान समा भक्ति से, कर्म मैल ना धुल पाता।।
दुविधा में रहता मन मेरा, नेमिनाथ की शरण लहूँ।
तेरे बिन ना मेरा कोई, सब दुखड़ा तब चरण कहुँ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः राहुमहाग्रह-सर्व-अरिष्टग्रह-रोगकष्टनिवारणं गोमेद यक्ष-कुष्मांडीयक्षी-सेविताय श्री-नेमिनाथजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नवम वलय

(केतु ग्रह अरिष्ट निवारक मल्लिनाथ भगवान एवं पार्श्वनाथ भगवान अर्घ्यावली)

दोहा– **खानपान की शुद्धि हो, चुगली व्यसन निवार।**
सेवा और विनम्रता, करें केतु संहार।।

(नवम-वलय-मण्डलस्योपरि-पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पार्श्वनाथ भगवान

केतु का जो कष्ट घनेरा, पारस भक्ति दूर करें।
करो सदा पूजा जलधारा, केतु ग्रह सुख पूर करें।।
कुष्ठ चर्म या अग्नि पीड़ित, दया दान कर कष्ट हरें।
केतु के हेतु जो जग में, साहूणं पढ़ इष्ट वरें।।1।।

ॐ ह्रीं केतुग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ भगवान

मन मर्कट-सा मचल रहा हो, मंत्र जाप वश में करता।
इन्द्रिय वश कर मल्लि नाथ सम, ब्रह्मचर्य व्रत दृढ़ रहता॥
कौतुकता में केतु ग्रह भी, किञ्चित ना नुकसान करें।
मोह मल्ल मल्लि सम नाशे, मल्लिनाथ गुणगान करें॥2॥

ॐ ह्रीं केतुग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र तंत्र में रुचि जगावे, धार्मिकता से दूर रहे।
पूर्वज भी बैरी सम होवे, केतु कष्ट भरपूर रहे॥
कमठ केतु तांत्रिक-सा जीवन, धर्म भाव ना चित लाये।
कमठ भाव से दूर रहे नित, पार्श्व प्रभु के गुण गावें॥3॥

ॐ ह्रीं केतुग्रह-अरिष्टनिवारक केतुविमानस्थित-अकृत्रिम-सिद्ध-परमेष्ठी-प्रतिमा सह-श्री-पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

सुख दुख में समता जागृत हो, ऐसी शक्ति प्रदान करो।
जीवन के सब कष्ट मिटें प्रभु, मेरा भी कल्याण करो॥
तुच्छ तिरस्कृत हूँ जिनवर, तुम श्रेष्ठ पुरस्कृत ईश्वर हो।
चिन्तामणि हे पारस प्रभुवर, सर्व सिद्धि के सरवर हो॥4॥

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः केतुमहाग्रह-सर्व-अरिष्टग्रह-रोगकष्टनिवारणं धरणेन्द्रयक्ष-पद्मावतीयक्षी-सेविताय श्री-पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

गृह में रहकर नवग्रह पीड़ा, पास मेरे ना आ पावे।
चौबीसी जिनवर की भक्ति, सारे कष्ट मिटा जावे॥

कर से कायोत्सर्ग करूँ मैं, नवग्रह बारह राशि हो[1]।
सौरभ सागर जाप करे नित, सर्व कर्म का नाशी हो॥

ॐ ह्रीं नवग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-चतुर्विंशतिजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम वलय

दोहा– **संस्थापक जिनधर्म के, आदिनाथ भगवान।**
विस्तारक महावीर हैं, परम् ज्योति निष्काम॥

(दशम-वलय-मण्डलस्योपरि-पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(चौपाई)

सात धनुष की ऊँची काया, देव गति की सारी माया।
चंद्र सूर्य दो इंद्र कहाते, बारह सहस किरण चमकाते॥
एक राजू लंबा चौड़ा है, एक सौ दश योजन मोटा है।
सात सौ नब्बे योजन ऊपर, ज्योतिष देव रहे निज घर पर॥1॥[2]

ॐ ह्रीं सूर्य चन्द्र इंद्रेण-स्वपरिवारसहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव पद-प्रदाय श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय नमः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

राहु ऊपर चंद्र विमाना, केतु ऊपर सूर्य बखाना।
ध्वज दण्ड से ऊपर चउ अंगुल, प्रतिदिन भ्रमते सोलह पथ कुल॥
चंद्रकला जब एक दिखाई, मावस की बेला है आई।
बड़ते क्रम से पूर्ण दिखे तब, पूरणमासी लोक कहे सब॥2॥

ॐ ह्रीं राहु-केतु-इंद्रेण-स्वपरिवारसहितेन पाद-पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव पद-प्रदाय श्री मल्लिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

---

1. सर्वश्रेष्ठ **करमाला** होती है। 12-राशी, 9-ग्रह दोनों का दोष दूर करने हेतु 12×9=108 जाप अन्य माला से नहीं **करमाला** से कायोत्सर्ग मुद्रा में करें।
2. तिल्लोय पण्णति, सर्वार्थ सिद्धि, त्रिलोक सार

चन्द्र किरण शीतल मन भावन, सूर्य किरण अति उष्ण तपावन।
ढाई सहस उज्ज्वल किरणें हैं, शुक्र ग्रह के क्या कहने हैं॥
मंगल गुरु बुध शनि ग्रह छोटे, मंद मंद किरणें उद्योते।
जिन प्रतिमा से युक्त विमाना, भ्रमते रहते क्षेत्र प्रमाणा॥3॥

ॐ ह्रीं मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि-इंद्रेण-स्वपरिवारसहितेन पाद-पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

गीता छंद– **सप्तेएकादश दश अठ उन्नीस, सोलह तेईस सहस जपों।**
अट्ठारह अरुँ सप्त सहस जप, विधिपूर्वक ही सहज जपों॥
पक्ष वार दिश समय वर्ण सब, प्रतिकूल मन क्लान्त करें।
वन्दन पूजन हवन जाप्य कर, ग्रह दोषों को शांत करें॥4॥[1]

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अनाहत-विद्यायै णमो अरिहंताणं मम सर्व ग्रह-अरिष्टनिवारक नव तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

माणिक मोती मूँगा पन्ना, पुखराज-सा रत्न अहो।
स्फटिक नीलम नीला अरुँ, काला रत्न हकीक कहो॥
तीर्थंकर तद् वर्ण समा जो, रत्न मन संतुष्ट करें।
धान्य पुष्प फल वस्त्र समर्पित, कार्य पूर्ण परिपुष्ट करें॥5॥*

ॐ ह्रीं श्वेत-श्याम-रक्त-स्वर्ण-हरित वर्ण युक्त-सर्व-ग्रहदोष-कष्ट-क्लेश निवारक चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

जन्म वार को मंदिर आकर, भावों से अभिषेक करें।
नग धारे या द्रव्य चढ़ावे, नव देवा जप नेक करें॥
दीन दुखी पशु सेवा करले, तीर्थंकर गुरु सुमरे नाम।
नवग्रह नव जिन देवा ध्यावें, सुधरे बिगड़े सारे काम॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा पद्म चन्द्र वसु शान्ति आदि पुष्पदंत-मुनिसुव्रत नेमि-पार्श्व-जिन सम अप्रतिहत शक्तिर्भवतु ह्रीं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

---

1. सभी ग्रहों की शांति हेतू मंत्र जाप्य हेतू पेज नं. 47-48 देखें

* पृष्ठ संख्या 48 पर देखें

सूर्य चंद्र बुध शुक्र शनि, या केतु ग्रह के दोष जगे।
तीर्थराज सम्मेद शिखर जा, तद् जिनवर की भक्ति रचें।।
तद् वर्णों की सामग्री ले, परिक्रमा कर टोंक नमें।
तीर्थंकर श्री सिद्ध अर्चना, छहों ग्रहों के दोष नशें।।7।।

[1]**सूर्यग्रह दोष निवारणार्थ**–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं **सूर्यग्रह** अरिष्टनिवारक **श्री-पद्मप्रभु जिनेन्द्रादि** मुनि, 99 करोड़, 87 लाख, 43 हजार, 757 मुनि सम्मेदशिखर के मोहन कूट से सिद्ध हुए उनके चरणारविन्द को मेरा बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

चन्द्रग्रह दोष निवारणार्थ–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं **चन्द्रग्रह**-अरिष्टनिवारक **श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रादि** मुनि, 984 अरब, 12 करोड़, 80 लाख, 84 हजार, 595 मुनि ललित कूट से सिद्ध भये जिनके चरणारविंद को मेरा मन-वचन-काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुधग्रह दोष निवारणार्थ–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं **बुधग्रह**-अरिष्टनिवारक **श्री-शांतिनाथजिनेन्द्रादि** मुनि, 9 कोड़ा कोड़ी, 9 लाख, 9 हजार, 999 मुनि कुंदप्रभ कूट से सिद्ध भये जिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्रग्रह दोष निवारणार्थ–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं **शुक्रग्रह**-अरिष्टनिवारक **श्री-पुष्पदंतजिनेन्द्रादि** मुनि, 1 कोड़ा कोड़ी, 99 लाख, 7 हजार, 780 मुनि सुप्रभ कूट से सिद्ध भये जिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शनिग्रह दोष निवारणार्थ–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं **शनिग्रह**-अरिष्टनिवारक **श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्रादि** मुनि, 99 कोड़ा कोड़ी, 99 करोड़, 99 लाख, 999 मुनि निर्जर कूट से सिद्ध भये जिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

केतुग्रह दोष निवारणार्थ–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं **केतुग्रह**-अरिष्टनिवारक **श्री-पार्श्वनाथजिनेन्द्रादि** मुनि, 82 करोड़, 84 लाख, 45 हजार, 742

1. (नोट-जो श्रावक जिस ग्रह से पीड़ित हों वही अर्घ्य समर्पित करें)

मुनि सुवर्णभद्र परम पुनीत कूट से सिद्ध भये जिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपापुर का क्षेत्र महाशुभ, पाँचों कल्याणक पाया।
वासुपूज्य वसुपूज्य पुत्र हैं, बालयति पद मन भाया।।
मंगल दोष रहे जीवन में, तीर्थ करें मंदारगिरि।
मंगलमय मंगल जीवन हो, मंगल दोष हरे सब हीं।8।।

मंगलग्रह दोष निवारणार्थ–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं **मंगलग्रह** अरिष्टनिवारक **श्री-वासुपूज्य जिनेन्द्रादि** चम्पापुर के मंदारगिरि से 1 हजार मुनि सिद्ध हुए जिनके चरणारविन्द को मेरा मन-वचन-काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नेमिनाथ की शादी में क्यों, छल से पशुओं को बाँधा ।
सांसारिक खुशियों के क्षण में, राजुल को आई बाधा।।
धोखा हानि हवा पराई, कुसंगत राहु कारण।
सिद्ध क्षेत्र गिरनार वंदना, नेमिनाथ जप मन धारण।।9।।

राहुग्रह दोष निवारणार्थ–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं **राहुग्रह**-अरिष्टनिवारक **श्री-नेमिनाथ जिनेन्द्राय** गिरनारपर्वते 72 करोड़ 700 मुनीराज मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द को मेरा मन-वचन-काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जन्मभूमि अयोध्या तीरथ, हस्तिनापुर आहार लिया।
सिद्ध क्षेत्र अष्टापद सुमरे, एक पाठ साकार किया।।
शतक वर्ष प्राचीन बिंब हो, कलशों सें अभिषेक करें ।
गुरु ग्रह पीड़ा तत्क्षण सिमटे, गुरु कृपा अतिरेक वरें।।10।।

गुरुग्रह दोष निवारणार्थ–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं **गुरुग्रह**-अरिष्टनिवारक **श्री-आदिनाथ जिनेन्द्राय** अष्टापद सिद्ध क्षेत्र से मुक्ति पधारे दश सहस्र मुनिवर सहित अयोध्या हस्तिनापुर क्षेत्रे सर्व जिन प्रतिमाभ्यो नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नवग्रह निवारक अतिशय क्षेत्र अर्घ्यावली

पद्मपुरी सोनागिर तीरथ, हस्तिनापुर अतिशय कारी।
काकंदी पैठण अहिक्षेत्रा, जिन प्रतिमा ग्रह दुख हारी।।
जप विधान चालीसा करके, पद्म चंद्र शांति भज ले।
पुष्पदंत मुनिसुव्रत पारस, वंदन कर सब सुख वर ले।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा अप्रतिहत शक्तिर्भवतु पदमपुरी-सोनागिर-हस्तिनापुर-काकंदी-पैठन-अहिक्षेत्रअतिशय क्षेत्रे विराजित षट्-ग्रह-दोष निवारक श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-शांतिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-पारसनाथ-अतिशयकारी सर्व-जिन-प्रतिमाभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपापुर गिरनार अयोध्या, अतिशय सिद्ध क्षेत्र प्यारा।
मंगल राहु गुरु ग्रह नाशक, तीरथ मंदिर हितकारा।।
शतक वर्ष प्राचीन बिम्ब हो, द्रव्य भाव से सदा नमें।
जप विधान चालीसा करके, वासु नेमि आदि भजें।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा अप्रतिहत शक्तिर्भवतु चम्पापुर-गिरनार-अयोध्या-अतिशय-क्षेत्रे विराजित-त्रयग्रहदोषनिवारक श्री-वासुपूज्य-नेमिनाथ आदिनाथ-अतिशयकारी-जिनप्रतिमाभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पगिरि का तीरथ पावन, अतिशय क्षेत्र महान है।
सहस्र वर्ष प्राचीन पार्श्व जिन, चमत्कारी भगवान है।।
निर्मल मन से करूं प्रार्थना, द्वंद क्लैश दुख छट जायें।
शांति नेमी पद्म प्रभु जिन, अर्घ चढ़ा मन सुख पायें।।13।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरि-अतिशयक्षेत्रे भू प्रगटित सहस्रवर्षप्राचीन-श्री-पार्श्वनाथ-नेमिनाथ-शांतिनाथ-सह-पद्मप्रभु-आदिनाथ-चन्द्रप्रभु-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-वर्धमान-बाहुबली-तीन-चौबीसी आदि सर्व-जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

नवग्रह की नव जिन प्रतिमाएँ, नव उल्लास हृदय भरतीं।
पुष्पगिरि में नव विधान की, रचना ज्योतिर्मय करती।।
पुष्पदंत गुरुदेव कृपा से, पाठ रचा ग्रह दुख हारी।
सौरभ सागर निज ग्रह ध्याता, जिन ग्रह पूजा सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नवग्रह-दोषनिवारक श्री-चतुर्विंशतितीर्थंकराय पंचकल्याणकसंयुक्ताय शिवपददाता सर्वविघ्न-व्याधिहर्ता तव भक्ति-प्रसादात सर्वजीव कल्याणमस्तु-दीर्घायुरस्तु-शुभमस्तु-सुकीर्तिरस्तु-सद् बुद्धिरस्तु-धनधान्य-समृद्धिरस्तु-सर्व-रोगशोकपीड़ाविनाशनम् भवतु सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र-वृद्धिरस्तु-सर्व ऋद्धि सिद्धि भवतु रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जयमाला

वीतराग जिनदेव की, भक्ति करे निःराग।
रागी मैं भक्ति करूँ, त्याग मार्ग अनुराग।।
लोक प्रकाशक तीर्थंकर हैं, पाप विनाशक कृपा निधान।
रत्नत्रय के दिव्य रूप हैं, जग हितकर भी देव महान।।
उपमा से महिमा गरिमा का, व्यवहारिक संबंध रहा।
कर्मातीत निरत शुद्धातम, सिद्धालय आनन्द महा।।1।।
क्षायिक नव लब्धि के धारी, नव ग्रह के जिन देव कहे।
भक्ति पूजा निशदिन करता, नव ग्रह के सब कष्ट बहे।।
नव तीर्थंकर नवकार जप, नवधा भक्ति नित्य करें।
नव निधि नव जीवन पाकर के, नव नव आनंद नित्य वरें।2।।
दो गोरे दो लाल मनोहर, दो काले दो हरे महान।
सोलह कंचनमय तीर्थंकर, कर्म दोष सब हरे जहान।।
मन से भक्ति करूँ मैं जिनवर, कर्म दोष से मुक्त रहूँ।
जब तक तन में साँस चलेगी, तब तक तव पद भक्त रहूँ।।3।।

तारण हारे पद्म चन्द जिन, वासुपूज्य शांति जिनराज।
आदिनाथ श्री पुष्पदंत प्रभु, मुनिसुव्रत नेमि महाराज॥
पारसनाथ जिनेश्वर पूजूँ, दया दृष्टि नित बनी रहे।
मिथ्यामत से बचा रहुँ बस, श्रद्धा जिनपर जमी रहें॥4॥
न अपराध न दोष करूँ मैं, पापों का ना करूँ चयन।
पुण्य व्रती सेवा संयम धर, करूँ सदा निर्वाण गमन॥
परमेष्ठी की भक्ति करूँ मैं, जिनवाणी का अध्ययन हो।
दीन दुखी पशु दश विध मुनियों, की सेवामय जीवन हो॥5॥
नर भव देवों से ऊँचा है, त्याग साधना कर सकते।
पंचम से चौदह गुण श्रेणी, चढ़कर सिद्धालय वरते॥
देव देवियाँ नर वश होकर, कार्य सिद्धि कर जाते हैं।
चमत्कार या अतिशय करके, मुनि सखा बन जाते हैं॥6॥
ग्रह दोष में कारण माने, देव सभी खेचर जानें।
तीर्थंकर के जन्म काल पर, भक्ति करें निज हित माने॥
भवनवासी में शंख ध्वनि कर, भेरी नाद व्यन्तर करते।
सिंहनाद ज्योतिष देवाकर, स्वर्गों में घण्टे बजते॥7॥
जय हो जय हो दिव्यनाद कर, देव सभी धरती आते।
बालक की आराधन करके, दुर्लभ मानुष गुण गाते॥
सर्व देव के इष्ट जिनेश्वर, चौबीसों तीर्थंकर हैं।
मालिक की भक्ति कर प्राणी, कष्ट हरे ये जिनवर हैं॥8॥
जब कर्मोदय आ दुख देते, दुनिया हँसती हम रोते हैं।
जिससे मन की बात कहुँ, वे रस ले पर से कहते हैं॥
नश्वर दुनिया में अपना था, ना अपना कोई प्राणी।
फूल शूल में समता रख शुभ, कर्म करूँ हे शिवगामी॥9॥
दु:खों का विष पीकर जीया, श्रद्धामृत अब पीऊँगा।
ज्योति पुँज है दया निधि, मैं अजर अमर हो जीऊँगा॥
स्वस्थ रहूँ मैं व्यस्त रहूँ, मैं धर्म कार्य में मस्त रहूँ।
द्वेष करूँ ना दीन रहूँ प्रभु, पाप कर्म से मुक्त रहूँ॥10॥

प्रस्तर में मूरत को ढूंढे, जंगल में मंजिल की राह।
कोलाहल में गीत ढूंढले, मावस में किरणों की चाह।।
साहस हो उत्साह लगन हो, जग सारे बौने होंगे।
मनराजी जग राजी जिनवर, कृपा दृष्टि तेरे होंगे।।11।।
मैं हूँ भव भव का दुखिया, तेरे चरणों में आया हूँ।
आओ आओ प्रभु दर्शन दो, मैं यही भावना भाया हूँ।।
इक बार सहारा दो जिनवर, सब कष्ट मिटे मुक्ति पाऊँ।
मन कमल खिला दो किरणों से, तव भक्ति में ही खो जाऊँ।।12।।
आँखों से दर्शन तेरे हो, हाथों से नित्य करूँ पूजन।
कदमों से चलकर दर आऊँ, अर्न्तमन से होवें सुमिरन।।
हे महागुणी! निर्ग्रन्थ देव! हे धर्म वीर! ध्रुव धाम रहे।
हे ज्ञानेश्वर! हे परमेश्वर! सौरभ सागर प्रणाम कहे।।13।।

धत्ता

जय नव जिनदेवा, कर्म खिपेवा, सब सुखदेवा, हितकारी।
जय विघ्न विनाशी, ज्ञान प्रकाशी, अविनाशी, मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं श्री नवग्रह अरिष्ट निवारक चतुर्विंशती जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– नवग्रहों की शान्ति को, चरण नमूँ शत बार।
नव लब्धि पाऊँ प्रभु, गा गा मंगलाचार।।

शांति शांति शांतिधारा
(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री नवग्रह जिनदेव विधान प्रशस्ति

महा भयंकर रोग करोना, भारत भूपर छाया था।
पुष्प गुरु का दर्शन पाने, अपना कदम बढ़ाया था।।1।।
तेरह मई सन बीस है प्यारा, दिव्य अलौकिक दर्श हुआ।
पुष्पदंत गुरु दर्शन पाकर, जीवन में नव हर्ष हुआ।।2।।

गुरु दर्शन प्रभु वंदन अध्ययन, भक्ति क्रम आरम्भ हुआ।
दो हजार इक्कीस चौमासा, गुरु चरणों में धन्य हुआ॥3॥

सर्व जिनालय दर्शन करता, भू प्रगटित जो भगवन हैं ।
पारस शांति नेमी वीरा, सबमें नव आकर्षण है॥4॥

क्षेत्रिय यात्री का आना भी, बंद किया था पर्वत पर।
दिल्ली यूपी हरियाणा के, भक्त सदा आते अंदर॥5॥

पर्वत के मंदिर की आभा, लखकर सब हर्षित होते।
सेवा भक्ति दान दया के, भाव सदा प्रगटित होते॥6॥

पुष्पदंत गुरु मुखारविन्द से, नित्य पाठ सुना करता।
मन्त्र हवन पूजा धारा से, पर्वत नित गुंजित होता॥7॥

मानतुंग श्री कुमुदचंद या, समंतभद्र पूज्यपाद मुनि।
उनकी भक्ति जैसे गुरु की, भक्ति धारा सदा सुनी॥8॥

गुण गाकर जिन दर्शन करने, सर्व जिनालय जाता था।
पाप विनाशक मंगलकारी, प्रतिमा दर्शन पाता था॥9॥

प्राचीन जिन प्रतिमा लखकर, नवग्रह जिन विधान रचा।
कारण और निवारण कहकर, भक्ति को दी नई दिशा॥10॥

विद्या औषध मंत्र नीर या, हवन जाप या पाठ विधान।
जिनवर की स्तुति करने से, दूर रहें सारे व्यवधान॥11॥

निर्मल भावों से अर्चन कर, संचित कर्म मिटाते हैं।
नवग्रह जिन प्रतिमा पूजन कर, सारे कर्म नशाते है॥12॥

सन उन्नीस के चौमासे में, रचना सुंदर स्वयं हुई।
दीक्षा दिवस के शुभ अवसर पर, महा विधान की धार वही॥13॥

भारत के सारे यात्री ने, नव उत्साह जगाया है।
सेवा शिक्षा संस्कृति में, अपना द्रव्य लगाया है॥14॥

गुरुवार की थी मनोभावना, सब भक्तों ने पूरी की।
पुष्पगिरी में नवग्रह विधान की, गुरुवर ने मंजूरी दी॥15॥

जिन प्रतिमा के सम्मुख जो भी, जाप विधान किया करते।
संकट के बादल छट जाते, जीवन सुखी जिया करते॥16॥

अतिशय हो या सिद्ध क्षेत्र हो, नगर जिनालय में जावे ।
नवग्रह जिन विधान रचाकर, "सौरभ सागर" सुख पावे॥17॥

जाप्य

सूर्यग्रह पीड़ा शांति हेतु मंत्र–ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं / ॐ ह्रीं श्रीं पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः मम सूर्य ग्रह अरिष्ट शांतिं कुरु कुरु। जिन मतानुसार किसी भी एक मंत्र का जाप 7000 संख्या में शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से पूर्व दिशा की तरफ मुँह करके प्रातःकाल लाल रंग की माला से करें।

चन्द्रग्रहपीड़ा शांति हेतु मंत्र–ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं / ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ –जिनेन्द्राय नमः मम चन्द्र ग्रह अरिष्ट शांतिं कुरु कुरु / जिन मतानुसार किसी भी एक मंत्र का जाप 11000 संख्या में शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से मोती की माला से संध्याकाल में करें।

मंगल ग्रह की शांति हेतु मंत्र–ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं / ॐ ह्रीं श्रीं वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः मम भौमग्रह अरिष्ट शांतिं कुरु कुरु। जिन मतानुसार किसी भी एक मंत्र का जाप 10000 संख्या में शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से मूँगे की माला से प्रातःकाल करें।

बुधग्रह की पीड़ा शांति हेतु मंत्र–ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं/ ॐ ह्रीं श्रीं शांतिनाथजिनेन्द्राय नमः मम बुधग्रह अरिष्ट शांतिं कुरु कुरु। जिन मतानुसार किसी भी एक मंत्र का जाप 8,000 संख्या में शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार से हरे हकीक की माला से प्रातः काल, करें।

गुरु ग्रह की पीड़ा शांति हेतु मंत्र–ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं / ॐ ह्रीं श्रीं ऋषभनाथ जिनेन्द्राय नमः मम गुरु ग्रह अरिष्ट शांतिं कुरु कुरु। जिन मतानुसार किसी भी एक मंत्र का जाप 19,000 संख्या में शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार से पीली माला पर संध्याकाल में करें।

शुक्र ग्रह की पीड़ा शांति हेतु मंत्र–ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं / ॐ ह्रीं श्रीं पुष्पदंतजिनेन्द्राय नमः मम शुक्र ग्रह अरिष्ट शांतिं कुरु कुरु। जिन मतानुसार किसी भी एक मंत्र का जाप 16,000 संख्या में सफेद स्फटिक की माला पर प्रातः काल करें।

शनि ग्रह की पीड़ा शांति हेतु मंत्र–ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं / ॐ ह्रीं श्रीं मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः मम शनि ग्रह अरिष्ट शांतिं कुरु कुरु। जिन मतानुसार किसी भी एक मंत्र का जाप 23,000 संख्या में काले हकीक या लौंग पर संध्याकाल में शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से उत्तर दिशा में मुँह करके करें।

राहु ग्रह की पीड़ा शांति हेतु मंत्र–ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं / ॐ ह्रीं श्रीं नेमीनाथ जिनेन्द्राय नमः मम राहु ग्रह अरिष्ट शांतिं कुरु कुरु। जिन मतानुसार किसी भी एक मंत्र का जाप 18,000 संख्या में रात्रि के समय शुक्लपक्ष के प्रथम शनिवार से नीले, काले हकीक की माला या लौंग पर करें।

केतु ग्रह की पीड़ा शांति हेतु मंत्र–ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं / ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मम केतु ग्रह अरिष्ट शांतिं कुरु कुरु। जिन मतानुसार किसी भी एक मंत्र का जाप 7,000 संख्या में रात्रि के समय शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार/मंगलवार से नीले, काले हकीक की माला या लौंग पर करें।

*** सर्व एव हि जैनानाय-प्रमाणं लौकिकौ विधि।**
यंत्र सम्यक्त्व हानि र्न यत्र न व्रत दूषणं।।

लोक प्रचलित वह सभी व्यवहार जैनियों को प्रमाण रूप से मान्य है जिसमें सम्यक्त्व की हानि और व्रत में दूषण न लगता हो अतः ग्रह पीड़ित सज्जन अपने ग्रह दोष निवारणार्थ उसी वर्ण के धान्य दान गरीबों में कर सकते हैं, पुष्प अर्पित कर सकते हैं, फल वस्त्र भी गरीबों में-दीन-दुखियों में बँटवा सकते हैं। ग्रह दोष निवारण के साधनभूत रत्न भी अँगुली में धारण कर सकते हैं। जिस प्रकार बीमारी में औषधी ग्रहण

करके तन रोग निवारण का साधन है उसी प्रकार कष्ट-परेशानी में रत्न धारण, वस्तुदान मन रोग निवारण संतुष्टि का माध्यम है।

नोट:-रत्न को गंधोदक में डालकर शुद्ध करें, दीपक के प्रकाश में तपायें और जिस ग्रह का दोष हो उसी नग को ***ॐ ह्रीं नमो अर्हते रक्ष रक्ष हूं फट् सूर्य दोष निवारणार्थ श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः पदम्-वर्ण-माणिक्य रत्न धारयामि इति स्वाहा।*** *जितनी उम्र हो उतनी बार या 9 बार जाप करें और अनामिका अँगुली में धारण करें।*

अर्घ्य गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी

जल चन्दन अक्षत पुष्पों की, सामग्री यह पावन है।
दीप धूप नैवेद्य फलों से, अर्घ बना मन भावन है॥
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदन्त गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी॥

ॐ ह्रूं गणाचार्य श्री पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलयो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य आचार्य श्री सौरभ सागर जी

जल चन्दन अक्षत पुष्प नैवेद्य, दीप धूप फल ले आए।
तब चरणों में अर्घ चढ़ा के, अष्टम वसुधा पा जाए॥
हम अर्घ समर्पित करते हैं, गुरुवर तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ-पद- प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री लघु चौबीसी पूजन (विधान)

स्थापना

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमतिनाथ स्वामी गुणखान।
पद्म सुपारस चन्दा प्रभु जी, पुष्पदन्त जिन कर लूँ ध्यान।।
हे शीतल प्रभु शीतल करदो, श्रेयनाथ जिन हृदय विशाल।
वासुपूज्य पद बाल ब्रह्म हैं, विमल अनन्त धरम जयमाल।।
शान्ति कुन्थु अर मल्लि जिनेश्वर, मुनिसुव्रत व्रत पाऊँगा।
नमिनाथ नम नेमि शरण पा, पारस वीर को ध्याऊँगा।।
चौबीसों जिनराज हमारे, आज पुकारूँ करुणा धार।
अत्र पधारो हृदय विराजो, कर्म खपाओ हे अविकार।।
तीर्थंकर हे धर्म शिरोमणि, कर्म नाश भव पार करो।
भक्ति भाव से पूजा करता, मम विनती स्वीकार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति तीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

जग की ज्वाला में जल जल कर, जीवन व्यर्थ गवाया है।
जल की धारा चरण कमल दें, जन्म जरा विनशाया है।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, जलधारा स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

चन्दन चुटकी ले आया प्रभु, वन्दन भाव जगा करके।
शीतल सुरभित मन हो जाए, पूजा पाठ रचा करके।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, चन्दन यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

उज्ज्वल तन्दुल भाव मृदुल कर, श्री जिन सम्मुख ले आऊँ।
अक्षय निधी अक्षय संयम धर, सिद्धालय को पा जाऊँ।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, अक्षत यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अक्षय-पदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

हृदय कमल कोमल करुणामय, काम बाण से रहित करो।
इन्द्रिय भोग तजूँ मैं जिनवर, ब्रह्मभाव को उदित करो।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, पुष्पाञ्जलि स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

इच्छाओं को दूर भगाया, नित उपवास किया करते।
क्षुधा वेदिनी नाश करन को, अन्नपान तजा करते।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, नैवेद्यम् स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मिथ्यातम में फँसा रहा पर, अन्तर दीप न जल पाया।
तेरी अनुपम दिव्य ज्योति से, अन्तर मन उज्ज्वल छाया।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, जगमग दीप स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

दीक्षा लेकर महा तपस्या, करते चौबीसों मुनिराज।
योग साधना निजानन्दमय, अद्‌भुत अनुभूति निजसाध।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, धूपं यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

तरुवर फल तन पुष्ट करावें, बाहर बढ़ता फलता है।
अन्तर मन का मोक्ष महाफल, भक्ति ध्यान से मिलता है।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, श्रद्धा फल स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्ष-महाफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

ऋजु भावों का शुभ जल लेकर, समता का चन्दन लाया।
ध्यान अवस्था के अक्षत ले, भक्ति पुष्प मन खिलवाया।।
चाहत की नैवेद्य चढ़ाकर, श्रद्धा दीप जलाऊँगा।
अष्ट मदों की धूप समर्पित, निराकार फल पाऊँगा।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, चरणों में अर्पित करता।
चौबीसी की पूजा करके, अन्तर मन हर्षित होता।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक

(चौपाई)

सोलह कारण भावना भाई, दया धर्म मन में प्रकटाई।
सोलह स्वप्न शगुन दर्शाता, पन्द्रह माह रतन बरसाता।।

तीर्थंकर का एक ही क्रम है, नाहीं संशय ना विभ्रम है।
गर्भ विषे जो जीव पला है, तीर्थंकर जग जीव भला है॥1॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो गर्भ-मंगल-मण्डिताय मम-गर्भ-दोष-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट देवीयाँ मंगल गाये, माता की सेवा चित लाये।
जन्म हुआ प्रभु का धरती पर, सुख शान्ति त्रय लोक में क्षणभर॥
देव इन्द्र सौधर्म भी आये, पाण्डुक वन अभिषेक कराये।
चिह्न लखा अरुँ नाम पुकारा, जन्म कल्याणक अति सुख कारा॥2॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जन्ममंगल-मण्डिताय मम-जन्मरोग-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगति के इन्द्रिय सुखभोगे, राज काज सब नित अवलोके।
पूर्व जन्म की यादें आई, या घटना ने भाव जगाई॥
लौकान्तिक सब देव भी आए, मनहर शिविका में बिठलाएँ।
छोड़ दिया नश्वर संसारा, भेष दिगम्बर अनुपम धारा॥3॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो तपोमंगल-मण्डिताय मम-चारित्र-वर्धनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षों जंगल में तप कीना, कभी कभी आहार है लीना।
धर्म गृहस्थी या संन्यासी, पथ दोनों दे तप अभ्यासी॥
पद्मासन खड्गासन रहते, परिषहों को हर क्षण सहते।
शुक्ल ध्यान चउ कर्म नशाया, केवलज्ञान कल्याण मनाया॥4॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो केवलज्ञान-मण्डिताय मम-कुज्ञान-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय योगों से मुक्त हुए हो, ध्यान अवस्था युक्त हुए हो।
सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति ध्याना, व्युपरत किरिया अरि सब हाना॥
अ-इ-उ-ऋ-लृ लघु शब्दा, कर्म जला तत्क्षण प्रभु सिद्धा।
निराकार चैतन्य प्रकाशी, चरण नमें पाने सुख राशि॥5॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्षमंगल-मण्डिताय मम-सर्व-कर्म विध्वंसनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी अर्घावली

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

आदिनाथ प्रथमेश जिन, धर्म कर्म दातार।
भव वारिधी से पार कर, मेटो मम संसार।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ भगवान का अर्घ्य

धर्मधुरा धारी प्रभु, धर्म बढ़ावें रोज।
अजितनाथ भगवान के बन्दूँ चरण सरोज।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभवनाथ भगवान का अर्घ्य

संभव सम भव अन्त हो, पाऊँ सिद्ध स्वभाव।
भावों में समभाव हो, तजूँ विकारी भाव।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनन्दननाथ भगवान का अर्घ्य

अभिनन्दन वन्दन करूँ, क्रन्दन कर्म नशाय।
जग बन्धन को तोड़कर, सिद्धालय को पाय।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमतिनाथ भगवान का अर्घ्य

मिथ्यावाद को दूर कर, स्याद्वाद प्रगटाय।
दुर्बुद्धि दुर्ध्यान तज, सुमतिनाथ शिर नाय।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभ भगवान का अर्घ्य

पद्मासन बैठे प्रभू, आतम पद्म खिलाय।
पद्म खिले निज ध्यान का, पद्म प्रभु सिर नाय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

वीतराग निज ज्ञान में, झलके तीनों लोक।
तत्व प्रकाशक महामुनि, चरण सुपारस धोक।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभु भगवान का अर्घ्य

अखिलेश्वर हे महाव्रती, तीर्थ प्रवर्तक आप।
धवल वर्ण तन आत्मा, चन्द्र प्रभु निष्पाप।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदन्त भगवान का अर्घ्य

भव भंजक भगवान हैं, पुष्पदंत शुभ नाम।
मगर चिह्न तन श्वेत है, शत शत करूँ प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ भगवान का अर्घ्य

धर्मामृत का दान दे, शीतल शिवपद पाय।
मम आतम शीतल करे, छोड़े विषय कषाय।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान का अर्घ्य

जय जय श्रेयांशम तव गुण पासं, कर्म विनाशं भक्ति करम्।
पावन पद बन्दों जय जिन चन्दों, कृपा करिंदो शान्ति प्रदम्।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

पाँचों कल्याणक महा, चम्पापुर में पाय।
बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराय।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ भगवान का अर्घ्य

बाहर भीतर स्वच्छता, विमल अमल गुणवन्त।
अर्घ चढ़ाकर पूजता, पाने पद अरहन्त।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्तनाथ भगवान का अर्घ्य

सुख अनन्त पाया प्रभु, कर कर कर्मन अन्त।
अर्घ चढ़ा वन्दन करूँ, अनन्तनाथ भगवन्त।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ भगवान का अर्घ्य

ध्वनि सुनि ध्रुवधाम की, धैर्य धर्म प्रगटाय।
ध्याता बन निज ध्येय को, धर्मनाथ सम ध्याय।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ्य

जय त्रिभुवन नायक आतम ज्ञायक, कर्म विनाशक शान्ति नमो।
जय शिवपुरवासी ज्ञान प्रकाशी, धर्म विकासी शान्ति नमों।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथुनाथ भगवान का अर्घ्य

कर्म जहर निज आत्मा, मरण देय भटकाय।
भक्ति कुन्थुनाथ की, सर्व जहर विनशाय।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथ भगवान का अर्घ्य

दर्पण में मुख रूप लख, भूला आत्म स्वरूप।
अरहनाथ सर्व दर्प हर, पाया चिन्मय रूप।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ भगवान का अर्घ्य

हे लेश्या तीता भव्या मीता, परम पुनीता मल्लि जिनेश।
जय आत्म विहारी बाल ब्रह्मचारी, आरती उतारी भक्ति विशेष।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का अर्घ्य

शत इन्द्रों ने भक्ति कर, नाशा भव भटकाव।
मुनिसुव्रत की अर्चना, देवे निज स्वभाव॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथ भगवान का अर्घ्य

नमिनाथ नमता रहूँ, नम्र भाव मन धार।
अहंकार सब मेट कर, धारूँ शुद्ध विचार॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान का अर्घ्य

पशु बन्धन को देखकर, धार लिया वैराग्य।
सर्वदर्शी नेमी प्रभु, नमन जगावे भाग्य॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

क्षायिक नव लब्धि महा, योग निरोध कर पाय।
पार्श्व प्रभु की वन्दना, पाऊँ निज स्वभाव॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ्य

शासन नायक वीर जिन, अनेकान्त सरताज।
समवशरण सन्देश दे, पाया मुक्ति राज॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्वामी का अर्घ्य

श्रद्धा का जल कर में लेकर भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरुवर पावन दीप धूप वन्दन भाया॥
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की पूजा कर सुख पाऊँगा॥

ॐ ह्रीं श्री मंशापूर्ण महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

आदि जिनेश्वर जग हितकारी, अजित नाथ जित कर्म विकारी।
संभव भव का नाश किया है, अभिनन्दन जग जान लिया है॥
सुमतिनाथ सन्मार्ग प्रदाता, पद्म प्रभु जी जग विख्याता।
नाथ सुपारस जय हो तेरी, चन्द्रप्रभु काटो भव फेरी॥
पुष्पदन्त श्री जिनवर नामा, शीतल शीतलता ध्रुव धामा।
श्रेयनाथ गुण दया निधाना, वासुपूज्य पूजित अविरामा॥
विमलनाथ निर्मलता धारी, है अनन्त अक्षय सुखकारी।
धर्मनाथ जिन धर्म बढ़ावें, शान्तिनाथ मन शान्त करावें॥
कुन्थुनाथ जी काम विजेता, अरहनाथ त्रिपद के नेता।
मल्लिनाथ सब शल्य मिटावें, मुनिसुव्रत व्रत में तिष्ठावें॥
नमिनाथ को नमन हमारी, नेमिनाथ दुख संकटहारी।
पारसनाथ सदा ही ध्याऊँ, महावीर पद शीश नवाऊँ॥

दोहा

चौबीसों के चरण में, वन्दन बारम्बार।
"सौरभ सागर" नित नमें, भक्तिभाव उरधार॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूणार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं वृषभादि वीराय नमः।

त्रिकाल चौबीसी प्रत्येक अर्घ

त्रिकालिक प्रथम तीर्थंकर

धर्म प्रवर्तक आदिनाथ जी, चिन्मय मूरत प्रथम जिनेश।
तीर्थंकर निर्वाण भूत के, प्रारंभिक ज्ञायक अखिलेश॥
आने वाले महापद्म जी, धर्म ध्वजा फहरायेगें।
भूत भविष्यत वर्तमान के, प्रथम तीर्थंकर ध्यायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ निर्वाण महापद्म त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक द्वितीय तीर्थंकर

कर्म विजेता अजितनाथ जी, गज चिन्हाकिंत द्वितीय जिनेश।
सागर से गंभीर भूत के, तीर्थंकर है अपर महेश।।
नर सुर सेवित भावी जिनवर, श्री सुरदेव सदा सुखकार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रय तीर्थंकर जय जयकार।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ, श्री सागर, श्री सुरदेव त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तृतीय तीर्थंकर

जग में संभव सब कुछ है जब, संभवनाथ कृपा बरसे।
महासाधु सा जीवन जीकर, ध्यान मग्न जीवन हरसे।।
आने वाले तीर्थंकर श्री, सुपार्श्वनाथ[1] कल्याण करें।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रय तीर्थंकर ध्यान धरें।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ, महासाधु, सुपार्श्वनाथ त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक चतुर्थ तीर्थंकर

मन मर्कट सा मचल रहा हो, अभिनंदन का जाप करें।
विमलप्रभ सा निर्मल मन कर, जीवन के संताप हरें।।
तीर्थंकर श्री स्वयंप्रभ सम, स्वयं प्रभा प्रगटाऊंगा।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर गुण गाऊंगा।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन, विमलप्रभ, श्री स्वयं प्रभ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–तृतीय तीर्थंकर का सुरिप्रभ नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक पंचम तीर्थंकर

सुमतिनाथ मति पाने को मन, सुमन सुमन ले नमन किया।
श्री श्रीधर[1] सम शुद्ध आत्म कर, सिद्धालय में गमन किया॥
सर्वात्मभूत जिन देव पांचवे, होने वाले तीर्थंकर।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पूजूँ तीनों तीर्थंकर॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ, श्रीधर, सर्वात्मभूत तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक षष्टम तीर्थंकर

खिला कमल सा चिन्ह आपका, पद्मप्रभु पावन भगवान।
सुदत्तनाथ के समवशरण में, दिव्य ध्वनि खिरती अविराम॥
तीर्थंकर श्री देवपुत्र[2] जी, होवेंगें पुण्यार्थ नमूं।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक सदा नमूं॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु, सुदत्तनाथ, देवपुत्र तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक सप्तम तीर्थंकर

स्वयं बोध स्वास्तिक से होता, नाथ सुपार्श्व का लांक्षन है।
कर्म रहित श्री अमलप्रभ[3] जी, सिद्धालय सुख हर क्षण हैं॥
कुल कीर्ति को बर्धित करने, वाले हैं कुलपुत्र[4] मुनि।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक त्रयों मुनि॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ, अमलप्रभ, कुलपुत्र नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–पंचम तीर्थंकर सर्वदुध नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–षष्टम तीर्थंकर जयदेव जी नाम का भी उल्लेख है।
3. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–सप्तम तीर्थंकर का सदल नाम का भी उल्लेख है।
4. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–सप्तम तीर्थंकर का उदयदेव जी का भी उल्लेख है।
   भूतकालीन तीर्थंकरः–नवम तीर्थंकर का आडिट नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक अष्टम तीर्थंकर

चंद्रमणि सम चंद्रकांति मय, चंद्रप्रभु जिनराज महान।
उद्धर जिन उद्धार कराते, सिद्धालय में ज्योतिर्मान।।
उदंकनाथ भावी तीर्थंकर, चरण वंदना नित्य करूं।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर का ध्यान करूं।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभु, उद्धर जिन, उदंक देव तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक नवम् तीर्थंकर

भव भय भंजक पुष्पदंत प्रभु, भवोदधि के तारणहार।
भूतकाल के अंगिर जिनवर, पूजूं कर्मन नाशन हार।।
प्रोष्ठिल[1] है भावी तीर्थंकर, पायेंगे आगे निर्वाण।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर पूजूँ धर ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त, अंगिर, प्रोष्ठिल तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक दशम तीर्थंकर

सुखदायक कल्याणक पाया, शीतल स्वामी तप करके।
भूतकाल के सन्मति देवा[2], सद्गति देवे भव हरके।।
जयकीर्ति जिनधर्म बढ़ाने, होंगे दशवें तीर्थंकर।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पूजूं कर्म रहित जिनवर।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ, सन्मति देव, जयकीर्ति तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–नवम तीर्थंकर का प्रश्नकीर्ति जी का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–दशम तीर्थंकर का अग्निनाथ नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक ग्यारहवें तीर्थंकर

घाति कर्म विनाशक जिनवर, नाम श्रेयांश है मंगलकार।
सिंधु[1] जिनवर बंदू अघहर, भव ध्वंसि गुण अपरंपार।।
पूर्ण बुद्ध हो मुनिसुव्रत[2] जी, नामधारी भावी जिनराज।
भूत भविष्यत वर्तमान जिन, पूजू निजानंद ध्रुवराज।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांश नाथ, सिंधुनाथ, मुनिसुव्रत नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बारहवें तीर्थंकर

वासुपूज्य ब्रह्मचारी जिनवर, सिद्धालय में रहे विराज।
कुसुमांजलि तीर्थंकर पूजूँ, भूतकाल के हे जिनराज।।
निष्कामी अर[3] अमल जिनेश्वर, नित्य सुखाश्रित बसते है।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक कहते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, कुसुमंजलि, अरनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तेरहवें तीर्थंकर

विमल भाव ले विमलनाथ के, विमल गुणों का गान करें।
शिवगण नायक आतम ज्ञायक, जिनवर का सम्मान करें।।
कर्म रहित निष्पाप नाम के, भावी तीर्थंकर जय कार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म शिरोमणि जग हितकार।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ, शिवगणनाथ, निष्पाप नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–ग्यारहवें तीर्थंकर का सयंम नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–ग्यारहवें तीर्थंकर का पूर्णबुद्ध नाम का भी उल्लेख है।
3. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–बारहवें तीर्थंकर का अरअहम नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक चौदहवें तीर्थंकर

जय भगवंतं नाथ अनंतम, पार किये चौदह गुणथान।
राग द्वेष मद मोह विनाशी, तीर्थंकर उत्साह[1] महान।।
निष्कषाय[2] भावी तीर्थंकर, स्वयं स्वयंभू कहलाए।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रैकालिक तीर्थंकर ध्याय।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ, उत्साह नाथ, निष्कषाय नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक पंद्रहवे तीर्थंकर

वस्तु का स्वभाव धर्म है, धर्मनाथ की वाणी है।
ज्ञानेश्वर[3] तीर्थंकर का शुभ, नाम आत्म कल्याणी है।।
विपुल[4] तपस्या विमल भाव से, भावी तीर्थंकर करते।
भूत भविष्यत वर्तमान के, हितकारी जिनवर भजते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ, ज्ञानेश्वर नाथ, विपुलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक सोलहवें तीर्थंकर

समरस भावों से समता रख, शान्तिनाथ जिनवर ध्याते।
परमेश्वर[5] के परम पदों में, प्रतिदिन नमनान्जलि लाते।।
निर्मल नाथ है भावी भगवन, निर्मलता दे जायेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवर अर्घ चढ़ायेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ, परमेश्वर नाथ, निर्मलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–चौदहवें तीर्थंकर का उत्सव नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–चौदहवें तीर्थंकर का स्वयंभू नाम का भी उल्लेख है।
3. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–पन्द्रहवें तीर्थंकर का यशोधरा नाम का भी उल्लेख है।
4. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–पन्द्रहवें तीर्थंकर का विमलप्रभ नाम का भी उल्लेख है।
5. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–सोलहवें तीर्थंकर का बदल नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक सत्रहवें तीर्थंकर

जग की क्षण भंगुरता जाना, कुंथुनाथ जग छोड़ गए।
विमलेश्वर[1] वैराग्य धारकर, जगती से मुख मोड़ गये।।
चित्रगुप्त न जीवन लिखते, ये भावी तीर्थंकर है।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवर अर्घ समर्पण है।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ, विमलेश्वर, चित्रगुप्त नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक अठारहवें तीर्थंकर

मछली सा चंचल यौवन है, अरहनाथ जी जान गए।
नाथ यशोधर तीर्थंकर है, जीवन को पहचान गए।।
समाधि गुप्त भावी तीर्थंकर, सन्यासी महिमा गाए।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म प्रवर्तक गुण गाये।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ, वर्धमान नाथ, समाधीगुप्त तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक उन्नीसवे तीर्थंकर

कलश चिन्हधारी प्रभुवर जी, मल्लिनाथ सब क्लेश हरें।
कृष्णमती के समवशरण में, भव्य जीव प्रवेश करें।।
स्वयं स्वयंभू नाथ हितैषी, भावी श्री भगवान बने।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को सदा नमै।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ, कृष्णमती, स्वयंभूनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकर:**–सत्रहवें तीर्थंकर का विनयेश्वर नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक बीसवे तीर्थंकर

मुनियों का व्रत मुनीसुव्रत ले, मुनियो के मुनि नाथ बने।
ज्ञानमती केवल ज्ञानी जिन, समवशरण सुरनाथ नमें।।
अनिवर्तक शुभ धर्म प्रवर्तक, भावी तीर्थंकर ध्याये।
भूत भविष्यत वर्तमान के, समवशरण धारी ध्याये।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत नाथ, ज्ञानमती, अनिवर्तक नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक इक्कीसवे तीर्थंकर

विश्व विलोकी अरिकुल नाशक, नमिनाथ जय भगवंता।
शुद्धमति तीर्थंकर हितकर, नमूं नमूं जय अरिहंता।।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, गुण धारी जयनाथ बने।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म धुरंधर चरण नमैं।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ, शुद्धमती, जयनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बाईसवें तीर्थंकर

बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर, नेमिनाथ गिरनार चढ़े।
भूतकाल के भद्रनाथ जी, शुद्ध भाव धर मोक्ष चढ़े।।
विमलनाथ भावी तीर्थंकर, विमल भाव से पूजेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को पूजेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ, भद्रनाथ, विमलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तेईसवे तीर्थंकर

पारस ने उपसर्ग सहा था, केवल ज्ञान मिला उपहार।
अतिक्रांत[1] जी है अतीत के, दीन दयालु धर्माधार।।
देवपाल देवाधिदेव जी, तीर्थंकर है दीनदयाल।
भूत भविष्यत वर्तमान को, अर्घ चढ़ाऊं भर भर थाल।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ, अतिक्रांत नाथ, देवपाल तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक चौबीसवें तीर्थंकर

वर्तमान के वर्धमान जिन, शासन नायक तारणहार।
शांतिनाथ[2] जी देव हमारे, भूतकाल के करुणा धार।।
अनंतवीर्य जी तीर्थंकर पर, भावी काल में होवेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को पूजेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान, शान्तियुक्त नाथ, अनंतवीर्य तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकर:**–तेईसवें तीर्थंकर का अनंतवीर नाम का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकर:**–चौबीसवें तीर्थंकर का शांतास् नाम का भी उल्लेख है।

अर्घ्यावली

समुच्चय अर्घ

अष्ट द्रव्य का अर्घ थाल लें, श्रद्धा से अर्पित करता।
है अनर्घ पद पावन तेरा, पाने मन उलसित होता।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय **अर्घम्** निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी अर्घ्य

ऋजु भावों का शुभ जल लेकर, समता का चन्दन लाया।
ध्यान अवस्था के अक्षत ले, भक्ति पुष्प मन खिलवाया।।
चाहत की नैवेद्य चढ़ाकर, श्रद्धा दीप जलाऊँगा।
अष्ट मदों की धूप समर्पित, निराकार फल पाऊँगा।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, चरणों में अर्पित करता।
चौबीसी की पूजा करके, अन्तर मन हर्षित होता।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस तीर्थंकर की अर्घावली

(चौबीस तीर्थंकर की अर्घावली पृष्ठ नं. 54 पर देखें)

चौबीस निर्वाण भूमि अर्घ्य

तीरथ है सम्मेद शिखर जी, बीस पधारे श्री निर्वाण।
आदिनाथ कैलाशगिरी से, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।।
नेमिनाथ गिरनार शिखर से, निराकार पद पाया है।
पावापुर महावीर प्रभु ने, आठों कर्म नशाया है।।
तीर्थंकर चौबीसो जिनवर, परम धाम को पाये हैं।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाकर श्रद्धा शीश झुकाये हैं।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणस्थली श्रीसम्मेदशिखर-गिरनार-कैलाशगिरि चम्पापुर-पावापुर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत काल चौबीस तीर्थंकर अर्घ

निर्वाण सागर महासाधु जी, विमल प्रभु गुण गान करें।
धर्म प्रवर्तक श्रीधर जिनवर, नाथ सुदत्त सुध्यान करें॥
अमल प्रभु जी उद्धर अंगिर, सन्मति का जयघोष करें।
सिंधु कुसमाँजलि शिवगण मुनि, तीर्थंकर उत्साह भरे॥
ज्ञानेश्वर परमेश्वर जिनवर, विमलेश्वर यशोधर शुभ नाम।
कृष्ण ज्ञान अरु शुद्धमति जिन, भद्रअति शान्ति सुख धाम॥
सिद्धालय में अमल अचल जिन, शाश्वत आनंद पाये है।
भूतकाल के चौबीस जिनवर, पूरण अर्घ चढ़ायें है॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाण आदि शांति पर्यन्त भूतकाल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घम् निर्वपामिति स्वाहा।

भविष्य काल चौबीस तीर्थंकर अर्घ

महापदम् सुरदेव सुपारस, स्वयं प्रभु सर्वात्म जिनेश।
देव पुत्र कुल उदंक नाथ जिन, प्रोष्ठिल जयकीर्ति जी विशेष॥
मुनिसुव्रत अरनाथ नमूँ मैं, पूजूं श्री निष्पाप कषाय।
ध्याऊ नाथ विपुल निर्मल जिन, चित्र समाधि गुप्त कहाय॥
नाथ स्वयंभू अनिवर्तक जय, विमल नाथ जयपाल जपूँ।
अनंतवीर्य जी अंतिम जिनवर, भावी तीर्थंकर पुजूँ॥
तीर्थंकर बन कर्म नशाये, जगति का कल्याण करें।
अर्घ चढ़ाऊ भावी जिनवर, सौरभ पा उत्थान करें॥

ॐ ह्रीं श्री महापद्मआदि अनंतवीर्य पर्यंत भविष्य काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घम् निर्वपामिति स्वाहा।

वर्तमान चौबीस तीर्थंकर अर्घ

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमतिनाथ स्वामी गुणखान।
पद्म सुपारस चन्दा प्रभु जी, पुष्पदन्त जिन कर लूँ ध्यान॥

हे शीतल प्रभु शीतल करदों, श्रेयनाथ जिन हृदय विशाल।
वासुपूज्य पद बाल ब्रह्म हैं, विमल अनन्त धरम जयमाल॥
शान्ति कुन्थु अर मल्लि जिनेश्वर, मुनिसुव्रत व्रत पाऊँगा।
नमिनाथ नम नेमि शरण पा, पारस वीर को ध्याऊँगा॥
तीर्थंकर है धर्म शिरोमणि, कर्म नाश भव पार करो।
भक्ति भाव से अर्घ चढ़ाऊ, मम विनती स्वीकार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्धम् निर्वपामिति स्वाहा।

माँ जिनवाणी अर्घ

दिव्य ध्वनि का निर्मल जल ले, तत्वों का चन्दन लाया।
अंग पूर्व का अक्षत लेकर, धर्म पुष्प मन खिलवाया॥
नय निक्षेप का नेवज लेकर, गुणस्थान का दीप जला।
अष्ट कर्म का धूम उड़ाया, निराकार फल मोक्ष मिला॥
चारों अनुयोगों से पूरित, जिन आगम को जान रहे।
अष्ट द्रव्य मय अर्ध्य चढ़ाकर, जिनवाणी सम्मान करें॥

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायैः अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन कम नौ करोड़ मुनिराजों का अर्घ्य

तीन घटाकर नौ करोड़ की, संख्या मुनिवर की जानो।
धरती पर जीवन्त जिनेश्वर, उन पर श्रद्धा हित मानो॥
तपसी जल से भिन्न कमल वत्, जीवन अपना जीते हैं।
ढाई द्वीप के मुनिराज को, अर्घ समर्पित करते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं अढाईद्वीप-मध्ये-तीन-कम-नौ-करोड़-मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया।।
तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा

तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिनका भेष।।

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

अर्घ-आचार्य श्री सौरभ सागर जी

जल से घुलते कर्म हमारे, चन्दन से मिलती शीतलता।
पुंज चढ़े जब गुरु चरणों, में पुष्प सुगन्धित है देता।।
नैवेद्य चढ़ाकर क्षुधा नशाऊँ, निज ज्ञान का दीप जलाऊँ मैं।
धूप चढ़ाकर कर्म जलाऊँ, फल से मोक्ष फल पाऊँ मैं।।
आठों द्रव्यों को एक मिलाकर, गुरुवर के गुण गाऊँ मैं।
भव भव के सब पाप नशे, अरिहंत अवस्था पाऊँ मैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी आचार्यश्री सौरभ सागर जी गुरुदेव चरणेभ्यो अन्घर्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूँ सिद्ध पूजूँ चावसों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पूजूँ भावसों।।1।।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रचे गणी।
पूजूँ दिगम्बर-गुरुचरण शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।

सर्वज्ञ भाषित धर्म-दशविधि दया-मय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोडश-रत्नत्रय जा बिना शिव नहिं कदा।।3।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पन मेरु नंदीश्वर, जिनालय खचर, सुर, पूजित भजूँ।।4।।
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।5।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जपि होय पति शिवगेह के।।6।।

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंच परमेष्ठिभ्यो नमः, प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यनुयोगेभ्यो नमः, दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः, उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः, सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः, जल के विषैं थल के विषैं आकाश के विषैं गुफा के विषैं पहाड़ के विषैं नगर नगरी विषैं ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताललोक विषैं विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः, पाँच भरत पाँच ऐरावत दशक्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सातसौ बीस जिनराजेभ्यो नमः, नन्दीश्वरद्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः, पंचमेरुसंबंधी अस्सी जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः, सम्मेदशिखर कैलाश चंपापुर पावापुर गिरनार सोनागिर मथुरा तारंगा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः, जैनबद्री मूडबिद्री देवगढ़ चन्देरी पपौरा हस्तिनापुर अयोध्या राजगृही चमत्कार जी श्रीमहावीरजी पद्मपुरी तिजारा बड़ागाँव पुष्पगिरी, सौरभांचल पार्श्वनाथ, मंशापूर्ण महावीर आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः, ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं कृपावन्तं श्रीवृषभादि महावीरपर्यन्तं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षत्रे आर्यखंडे.....नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे..... मासे.....शुभे.....पक्षे शुभ.....तिथौ..... .....वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं (जलधारा) अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घ्यं सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति पाठ (हिन्दी)

शांतिनाथ! मुख शशि उनहारी, शील गुण व्रत, संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमल दल लाजें।।1।।

पंचम चक्रवर्ती पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमौं शांतिहित शांतिविधायक।।2।।

दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुंदुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।3।।

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत् पूज्य पूजौं सिरनाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघ को।।4।।

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके, इंद्रादिदेव अरुँ पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वर वंश जगत् प्रदीप, मेरे लिए करहु शांति सदा अनूप।।5।।

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीन को औ यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे।।6।।

होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा।

होवे चोरी न जारी, सुसमय वरषे हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारें, जिनवर वृष को जो सदा सौख्यकारी।।7।।

घाति कर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करें सब जगत् में, वृषभादिक जिनराज।।8।।

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तौं का, सुजस कहके, दोष ढाँकू सभी का।।9।।

बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौ सेऊँ, चरण जिन के मोक्ष जौ लौ न पाऊँ।।10।।

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहे प्रभु, जबलौं पाया न मुक्ति पद मैंने॥11॥

अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुःख से॥12॥

हे जगबंधु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥13॥

विसर्जन पाठ (हिन्दी)

बिन जाने या जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय॥
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन भी नहीं, क्षमा करो भगवान्॥
मंत्र हीन धन हीन हूँ, क्रिया हीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥
श्रद्धा से आराध्य पद, पूजे भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण॥
आए जो जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण।
ते अब जावहु कृपा कर, अपने अपने थान॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि

(इसके पश्चात् खड़े होकर आरती करें)

आसिका लेने का पद

श्री जिनवर जी की आसिका, लीजे शीश चढ़ाए।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाए॥

(स्तुति या भजन आदि बोलते हुए वेदी सहित प्रतिमाजी की तीन प्रदक्षिणा देकर धोक देनी चाहिए)

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र

हृदय कमल में अर्हत पद का स्थापन जो है करना,
कार्मन काठ जलावन कारण अग्नि ज्वाला है बनना।
निर्मल है वह निर्मल करता अर्हत पद का दाता,
बारम्बार नमूँ मैं उनको, पाऊँ अक्षय साता।
हृदय कमल की आठ पँखुड़ी उनमें क्रम से रखना,
अर्हंत, सिद्ध आचार्य उपाध्याय, साधु सर्व विचरना।
सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र उचरना,
ऐसे आठों पूज्यनीय को, चित में फिर फिर धरना।
ऊँ बीजाक्षर प्रथम उचारै, नमः पल्लव करिये,
ध्यान धरै इन आठों पद का, आनन्द उर में भरिये।
अरहंत पद का ध्यान किये से, सिर की रक्षा होवे,
सिद्ध समूह जपन करने से, मस्तक रक्षित होवे।
सूरि सुगुण मन में ध्याने से, नेत्र सुरक्षित होवे,
चौथे पद के गुण चिंतन से, घ्राण सुरक्षित होवे।
मुख की रक्षा करे साधुगण, दर्शन गर्दन रक्षै,
नाभि रक्षे सप्तम पद, जो सम्यग्ज्ञान सुदक्षै।
सम्यक्चारित्र सर्व अंग को, पाद पर्यन्त सुरक्षे,
ऐसे सकलीकरण करन से, होवे पूजक अक्षै।
ऋषि मण्डल यह पूजन भारी, इसको विधि से करिये,
विघ्नविनाश करें सुखदाता, श्री ब्रह्मचारी उचरियें।

सब द्वीपों के मध्य जम्बूद्वीप बसे,
उसकी है आठ दिशा पूरब आदि लसे।
अर्हंतादि पद आठ उनमें राजत हैं,
करिये उनका ध्यान पाप पलावत है।
मध्य सुदर्शन मेरु कंचनमय सोहे,
उपरि सिंहासन माहि अक्षर ह्रीं मोहे।
उनमें चौबीस जिनेश उनके गुण भारी,

अक्षय निर्मल शांत ताप जाड्य हारी।
निरहंकार निरीह सार, सार गुण सोहे,
सौम्य शुद्ध शुभ रूप तीन लोक मोहे।
तीन लोक के स्वामी यातें राजस है,
कर्म घातिया चूरे यातैं तामस है।
सदगुण से भरपूर सात्विक सोहत है,
ज्ञान तेज से सूर्य भ्रमतम खोवत है।
रूपगंध रस वर्ण इनसे दूर रहे,
तो भी है साकार समरस पूर रहे।
पर को दिया त्याग निज रस में पागे,
परमौदायिक देह आतम गुण जागे।
चूरे है सब कर्म तन को है छोड़ा,
निज रस पी संतुष्ट पर से मुँह मोड़ा।
करी कालिमा दूर आकांक्षा पूरी,
संशय रहा न लेश सब आशा पूरी।
ईश्वर ब्रह्मा बुद्ध ज्योति रूप खड़े,
शाश्वत सिद्ध स्वरूप सब में देव बड़े।
लोकालोक प्रकाश करते नाहि थके,
ऐसे श्री ह्रीं देव मेरे मन में धरे।
एक वर्ण दो वर्ण तीन वर्ण धारी,
चार पाँच हैं वर्ण सब के अधिकारी।
ऋषभादिक चौबीस तीर्थंकर सब ही,
ध्याओ उनको नित्य जैसे निम्न कही।
अर्ध चंद्र आकार ह्रीं का नाद कहा,
उसका वर्ण है श्वेत जैसे चन्द्र महा।
उसमें ध्याओ देव श्वेत वर्ण वाले,
चन्द्रप्रमु पुष्पदंत सब के रखवाले।
श्याम वर्ण की देह बिंदी की कीजै,
उसमें लिखिये नेमि मुनिसुव्रत कीजै।
मस्तक ऊपर भाग लाल वर्ण सोहे,

पद्मप्रभु वासुपूज्य अरुँण वर्ण मोहे।
शिर संलीन ईकार नीलम वर्ण कहा,
सुपार्श्व पार्श्व महाराज थापूँ पूज्य महा।
सोलह श्रीजिन देव कंचनमय देहा,
वे-ह-र मध्य लिखेय होवे सुखगेहा।
रागद्वेष मद मोह जीते इन सबने,
मायालीन में ये राजत हैं सब रे।
इनका सदा ध्यान किये जो ज्वाला निकले,
उनमें वेष्ठित देह मेरी जो उजले
तब नाही विषधर जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
श्री ऋषिमण्डल मध्य ह्रीं का परिकर है,
उसमें रक्षित देह मेरी सुखकर है।
तब नाहिं नागिन जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
सर्वऋद्धि के ईश अर्हत गणधर हैं,
उनके तेज से लोग वेग सब ही व्याप्त है।
उनका ध्यान किये परम सौख्य होगा,
विलय जायेंगे दु:ख मेरे अति वेगा।
पाताल, लौकिक देव, मध्य लोकवासी,
निर्जर ऊरघ लोक सब विमानवासी।
तुम सब ही जिन भक्त साधर्मी भाई,
करना मेरी सहाय सुनिये मनलाई।
मुनिवर है जगमाहिं अवधि श्रुतधारी,
विक्रिया चारण आदि सब ही ऋद्धिधारी।
मुझ पर कीजै कृपा तुम रक्षक सबके,
अतएव पूजूँ पायें विघ्न हरो जनके।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्तुति

हे वीर प्रभो महावीर प्रभो, तेरे चरणों में आया हूँ।
सब पाप ताप संताप हरो, मैं अर्चन कर हर्षाया हूँ॥
आओ आओ प्रभु एक बार, मेरे मन का प्रक्षाल करों।
हे महाश्रमण हे वर्धमान, तुम सन्मति दे जंजाल हरों॥
प्रभु मंशापूरण करते हो, प्रभु संशय तिमिर भी हरते हों।
मैं मन से पूजा तेरी करूँ, सुख सिन्धु से भी भरते हों॥1॥
श्रद्धा का जल कर में लेकर, भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरूवर पावन, दीप धूप वन्दन भाया॥
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु, आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की, पूजा कर सुख पाऊँगा॥2॥
महामना हे महामुनि हे, महायोगी महाज्ञानी हो।
महाशक्ति हे महाज्योति हे, महाप्रभु महादानी हो॥
महाव्रतों को महाभाव से, महावीर ने धार लिया।
मंशापूरण महावीर बन, मानव का उद्धार किया॥3॥
भावों की शुभ निर्मलता ही, भव बन्धन को नित काटें।
निज स्वभाव में रम जा चेतन, खोल राग की सब गाठें॥
भाव-साधना-भाव-समाधी, भाव स्वभाव मे लीन रहें।
द्रव्य भाव द्वय अर्घ्य समर्पित, श्रद्धालय में लीन रहें॥4॥
अन्तिम गर्भ हो चरमोत्तम तन, महावीर-सा बन जाऊँ।
महाअर्घ चरणाम्बुज देकर, वज्र कर्म सब विनशाऊँ॥
तीर्थंकर का गर्भाराधन, गर्भ दोष का नाश करे।
त्रय ज्ञानी समकित तीर्थंकर, धर्मात्मक उल्लास भरे॥5॥
जन्म काल का अतिशय सुखकर, तीर्थंकर ही पाते हैं।
कल्याणक शुभ जन्म मनाकर, नर देवा हर्षाते हैं॥
जन्म मरण की भ्रमण शृंखला, तब पूजा से घट जाये।
अर्घ समर्पित तव चरणों में, मोह तिमिर सब छट जाये॥6॥
वर्धमान अतिवीर वीर जिन, महावीर शुभ नाम कहो।
सद्बुद्धि सन्मार्ग प्रदाता, सन्मति का गुणगान अहो॥
राग-द्वेष मद लोभ मोह सब, नामोच्चारण दूर करें।
अर्घ समर्पित मंशापूरण, धर्मभाव भरपूर भरे॥7॥

दीर्घ साधना कर्म निर्जरा, धर्म ध्यान से नित साधें।
तन मन की इच्छा ज्वाला को, शुक्ल ध्यान जल से नाशें॥
महावीर की वीतरागता, निर्मल-निच्छल-मनहारी।
पूर्णअर्घ चरणों मे अर्पित, वर्धमान दीक्षाधारी॥8॥
केवलज्ञानी अतिशय धारी, चार घातियाँ नाश किया।
प्रातिहार्य आठों सज्जित है, समवशरण प्रवास किया॥
विपुलाचल वैभार गिरी या, पुण्यवान जग जीव जहाँ।
दर्शन पूजन व्रत उपदेशा, पाकर तिरते जीव यहाँ॥9॥

दोहा– अल्पज्ञान लब्ध्यक्षरा, पूरण केवल ज्ञान।
महावीर की देशना, करें आत्म कल्याण॥10॥

भू भीतर देवों द्वारा ही, पूजा सेवा नित होती।
वर्षों तक ना पुण्योदय था, दर्शन फिर कैसे होती॥
सात नवम्बर भू से प्रगटे, मंशापूरण श्री भगवान।
अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति गाऊँ, वर्धमान महावीर महान॥11॥
भक्ति में तन्मय हो करके, चिन्मय मुरत पाया है।
सिद्ध निरामय निर्मल निश्चल, अविनाशी सुख पाया है॥
हो विरक्त जग उलझन से प्रभु, तेरे दर पर आऊँगा।
आत्म ओज का उद्भव होवे, महावीर गुण गाऊँगा॥12॥
सुख राशि गुणदाता जिनवर, दया सिन्धू महावीर प्रभो।
विघ्न हरण हे मंशापूरण, वर्धमान अतिवीर विभो॥
परमेश्वर हो, प्रतिपालक हो, जिन शासन के नायक हो॥
महा-अर्घ्य चरणों मे अर्पित, सौरभ सागर ज्ञायक हो॥13॥

दोहा

महावीर जिनराज का, अद्भुत है दरबार।
भक्ति से पूजा करूँ, नमन करूँ शतबार॥14॥

धत्ता– जय जय महावीरा भवदधि तीरा, गुण गंभीरा अतिवीरा।
मम धर्म बढ़ावे जिनपद पावें, सौरभ सागर नत धीरा॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्र पंचकल्याणक संयुक्त शिवपद-कर्त्ता-भव-जल-निधी सर्वविघ्नव्याधिहर्ता तव भक्ति प्रसादात् सर्व जीव कल्याणमस्तु दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु धन-धान्य समृद्धिरस्तु आरोग्यमस्तु सर्व जीव रोग शोक पीड़ा विनाशनं भवतु सम्यग्दर्शन ज्ञान-चारित्र-वृद्धिरस्तु सर्व-ऋद्धि-सिद्धि-भवतु रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की पूजा

स्थापना

सौरभ सागर गुरु को, नमन हो बारम्बार।
श्रद्धा पुष्प चढ़ा रहे, करना तुम उद्धार।।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो, सौरभ सागर महाराज।
जिह्वा गुण गाती रहे, हो मुनिवर सरताज।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज अत्र अवतर-अवतर संवौष्ट आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

रगड़ रगड़ कर ये तन धोया, मन का मैल ना धो पाए।
इसीलिए तो गुरुवर क्षीरोदधि, से जल लेकर आए।।
निर्मल जल अर्पित करते हैं, जन्म जरामृत नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

तरह तरह के लेप किए पर, तन संताप ना दूर हुआ।
जितना इसका शमन किया यह, उतना ही फिर और बढ़ा।।
मलयागिर चन्दन अर्पित तुमको, भव संताप को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

संसार दुःखों से भरा हुआ, नहीं मिलता मुझे किनारा है।
मोह माया से जकड़ा जीवन, पर ना कोई सहारा है।।

उज्जवल अक्षत अर्पित तुमको, इनको तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम वेग से घिरे हुए हैं, कैसे बन्धन तोड़े हम।
तरह तरह के इत्र लगाए, इन्द्रीय दास बने हैं हम।।
कोमल पुष्प समर्पित तुमको, काम बाण को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

नाना मिष्ट पकवान डकारे, फिर भी क्षुधा ना शान्त हुई।
जिव्हा के वश होकर मैंने, भक्ष अभक्ष की सुधि खोई।।
सरस नैवेद्य अर्पित तुमको, क्षुधा रोग को ध्वस्त करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में क्षुधा रोग विनाशनाय-नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

अज्ञान तिमिर ने हमको घेरा, कैसे मंजिल पाएंगे।
तेरे ज्ञान की ज्योति पाकर, सहज पार हो जाएंगे।।
ज्ञान से ज्ञान की ज्योति जलती, दीपक तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

अष्ट कर्म की दलदल में हम, हरदम फंसते जाते हैं।
पाप कर्म हम करते रहते, फल से नहीं घबराते हैं।।

धूप समर्पित तव चरणों में, अष्टकर्म का दहन करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

लौंग बादाम और किशमिश लेकर, तेरे द्वारे आए हैं।
मोक्ष के फल का स्वाद बता दो, इच्छा मन में लाए हैं।।
फल अर्पित है चरण तुम्हारे, मुक्ति रमा का वरण करूँ।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोक्ष फल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प नैवेद्य, दीप धूप फल ले आए।
तब चरणों में अर्घ चढ़ा के, अष्टम वसुधा पा जाए।।
हम अर्घ समर्पित करते हैं, गुरुवर तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ-पद-प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **भव भव से भटके फिरे, कोई ना तारनहार।**
सौरभ सागर गुरु मेरे, तुम ही करो उद्धार।।

जयमाला

लय (दे दी हमें आजादी....)

सौरभ सागर जी देव, गुरुदेव हमारे।
करते हैं भव से पार, गुरुदेव हमारे।।
माँ चन्द्रप्रभा कोख में, जब आप थे आए।
शुभ स्वप्न देख माता भी, फूली ना समाए।।

गज, सर्प, आग, सूर्य भी, देख लिया था।
अद्वितीय पुत्र जन्मेगा, ये जान लिया था।।1।।

जसपुर में गुरुदेव, तुमने, जन्म लिया था।
जसपुर की माटी को भी, तूने धन्य किया था।।
गुरू पुष्पदंत संघ, जसपुर में पधारे।
बालक सुरेन्द्र पुष्प संग, चल दिया प्यारे।।2।।

तपअग्नि में बारह वर्ष, गुरूदेव तपाया।
मैं भी बनूँ तब सम, गुरु ये मन में है भाया।।
आचार्य गुरुदेव ने, सौरभ बना दिया।
मुनिबाने से गुरुदेव ने, तुमको सजा दिया।।3।।

बाली उमर से सौरभ जी, अमृत पिला रहे।
आहत भी राहत पाके, आशीष पा रहे।।
संस्कार अलख देव, जन जन में जगाए।
संस्कार प्रणेता तभी, गुरुदेव कहलाए।।4।।

सृजन किया गुरुदेव ने, रचना कई लिखी।
सिद्धान्त शतक एक है, नायाब नव कृति।।
जिसने भी गुरुदेव का, साहित्य पढ़ा है।
जैनत्व बोध करके, उसका पाप कटा है।।5।।

बच्चों व शिक्षकों को, चमड़ा मुक्त किया है।
सौरभाँचल तीर्थ का, उपहार दिया है।।
हिसार की नसिया का, भी उद्धार है किया।
मनहर पारस क्षेत्र नाम, उसको दे दिया।।6।।

भू गर्भ में दबे थे, आदि पार्श्व अर वीरा।
अपने ज्ञान योग से, तुम जान लिया था।।
ज्ञान योगी देव गुरूदेव कहाए।
गुरूदेव के जयकार से गगन गुंजाए।।7।।

झज्जर के ग्राम झाडली में वीर थे प्रकटे।
ना देगे वीर मूर्त, ग्रामवासी अड़ गए।।
भक्ति की शक्ति से, महावीर बुलाए।
मंशा पूर्ण वीर, महावीर कहलाए।।8।।

पुष्पगिरी तीर्थ अप्रैल दश महा।
मेला लगा दृश्य अनुपम रहा महा।।
चारों दिशाएं गुंज उठी नमस्कार से।
आचार्य पद प्रतिष्ठा हुई जयजयकार से।।9।।

हम भी तो तेरे दर पे, अरदास लाए हैं।
दर्शन तिहारे मिलते रहे, प्यास लाए हैं।।
जीवन में मेरे 'आशा' की, तुम ज्योत जगा दो।
सुना है तेरा नाम, मेरी बिगड़ी बना दो।।10।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **सौरभ सागर गुरु का, करूँ हमेशा ध्यान।**
भक्त की हर श्वास में, सौरभ सागर नाम।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ - आचार्य श्री सौरभ सागरजी

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन शृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
आचार्य श्री 108 सौरभ सागर चालीसा

मनमंदिर में आन बसे, सौरभ सागर महाराज।
धर्म की राह दिखा दई, और सँवारे काज॥
ऐसे गुरु का यदि रहे, भक्त के सिर पर हाथ।
रोग शोक सब दूर रहे, सुख की हो बरसात॥

सौरभ सागर गुरु हमारे, भक्तों के सब कष्ट निवारे।
ये गुरुवर है अन्तर्यामी, मन की सारी बाते जानी॥
मनमोहक मुस्कान तुम्हारी, छवि तुम्हारी है मनहारी।
चन्द्रप्रभा जी की कोख में आए, शुभ लक्षण उनको दर्शाए॥
उगता हुआ इक सूरज देखा, सर्पो का एक जोड़ा देखा।
इक जंगल में आग भी देखी, हाथी की इक जोड़ी देखी॥
श्री पाल जी को स्वप्न बताए, फल जाना तो बहु हरषाए।
पुत्र रत्न इक घर आएगा, दावानल सा यश पाएगा॥
मस्त हस्ती सम भ्रमण करेगा, सूरज सम जग में चमकेगा।
बाबा की आँखों का तारा, सुरेन्द्र नाम लगता था प्यारा॥
गुरु पुष्प संघ जसपुर आया, इस बालक का भाग जगाया।
अद्भुत प्रतिभा देखी तुझमें, ज्ञानयोगी इक छिपा था तुझमें॥
पिता से तुमको मांग लिया था, मात पिता ने सहर्ष दिया था।
तप अग्नि में तुम्हें तपाया, बारह बरस का समय बिताया॥
क्षमावाणी का शुभ दिन आया, दीक्षा धारुँ ये था भाया।
21 सितम्बर दिन पुण्यशाली, होती गुरु की दीक्षा दिवाली॥
चहुँ दिशि अम्बर बने तुम्हारे, वीतरागी मुद्रा जब धारे।
वाणी तेरी शीतल चन्दन, शीघ्र मिटाती मन का क्रन्दन॥
जिस नगरी भी कदम बढ़ाए, अतिशय अपने खूब दिखाए।
धर्म की ऐसी अलख जगाई, 'संस्कार प्रणेता' उपमा पाई॥
जेल में जो उपदेश सुनाए, मद्य माँस से लोग छुड़ाए।
जब बच्चे उपदेश हैं सुनते, शहद ब्रैड व चमड़ा तजते॥
जिस नगरी भी किया चौमासा, भक्तों के मन भर दी आशा।
निर्बल तुझसे बल पा जाए, वीराने हरियाली पाए॥

जंगल में मंगल करते हो, संकट सारे तुम हरते हो।
जिस पर होती कृपा तुम्हारी, उसकी तो किस्मत है सँवारी॥
एक प्रेरणा तुमसे पाई सौरभाँचल की नींव धराई।
सौरभाँचल एक तीरथ प्यारा, नव जिनग्रह का देख नजारा॥
वृहद आदि पद्मासन प्रतिमा, नीलाम्बर का लगा चँदोवा।
श्रुत स्कन्ध मंदिर बनवाया, द्वादशांग का मान बढ़ाया॥
रत्न चौबीसी मन को भाए, देख देख के हिय हरषाए।
सूनी थी हिसार की नशिया, पर भू भीतर दबी थी निधिया॥
अपने ज्ञान ध्यान से जाना, त्रय जिनदेवा भीतर जाना।
हाथों से मिट्टी खुदवाई 'पार्श्व' 'आदि' 'वीरा' छवि पाई॥
जयकारों से गगन गुँजाए, ज्ञानयोगी गुरुदेव कहाए।
'मनहर पारस क्षेत्र' कहाया, सहस्त्र कलश से न्हवन कराया॥
मंशापूर्ण श्री महावीरा, सेवा भाव जगावे धीरा।
जीवन आशा नाम पुकारा, विकलांगों का बने सहारा॥
ज्ञानी मन चिंतन करता है, हर पल काव्य ग्रन्थ लिखता है।
धर्म गगन में करे विहारा, "सिद्धांत शतक" आगम है प्यारा॥
सब शूलों की सेज उठाते, जैनत्वो का बोध कराते।
पापों के दहकते अंगारे, प्रेरक प्रवचन बुझाते सारे॥
फैशन एक अभिशाप बताया, गर्भपात से सबको बचाया।
जैन विधान सदा करवाते, भक्तों के शुभ भाव जगाते॥
ख्याति लाभ की नहीं कामना, पूजा की भी नहीं चाहना।
विज्ञापन से दूर ही रहते, चर्या सावचेत हो करते॥
आगम के रत्नाकर गुरुवर, शान्त सौम्य छवि सुन्दर गुरुवर।
आशीर्वाद गुरु का फलता, जीवन सहज सरल हो चलता॥
तीर्थराज सम्मेद शिखर है, श्री सौरभांचल का परिसर है।
सहस्र वर्ष प्राचीन है प्रतिमा, अतिशयकारी पारस महिमा॥
10 अप्रैल का शुभ दिन आया, पुष्यगिरी में उत्सव छाया।
रवि पुष्य नक्षत्र कहाया, पुष्पदन्त ने सूरी बनाया॥
देश विदेश से यात्री आये, दृश्य देखकर अति हर्षाये।
सौरभ गुरु को शीश नवाया, धन्य धन्य सौभाग्य जगाया॥

जिस धरती पर कदम बढ़ाए, वो माटी चन्दन बन जाए।
घर घर ज्ञान के दीप जलाए, अज्ञान तिमिर मन का हट जाए।।
दर्शन पा मन पुष्प खिला है, वर्द्धमान का दर्श मिला है।
जब से तेरा साथ मिला है, 'हम-सब' को भगवान मिला है।।

दोहा– सौरभ सागर चालीसा, मन से जो भी ध्याय।
त्याग धर्म बढ़ता रहे, गुरु अनुकंपा पाए।।
गुरुवर तेरे चरण में, नमन हो बारम्बार
पापों का क्षय हो मेरा, भव से हो जाऊँ पार

(9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रूं सौरभ सागर गुरुवे नमः।

आरती आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की

(लय - तन डोले, मन डोले ...)

सौरभ सागर की, गुण आगर की
शुभ कंचन दीप सजाय के, आज उतारूँ आरतिया
माता चन्द्रप्रभा जी के जाये, श्रीपाल जी के सुत कहलाये
पुष्पदंत जी की बगिया से, ये कोमल पुष्प है आये
सुगन्धित कोमल पुष्प है आये
गुरु की सुरभि से सुरभित होकर कंचन दीप सजाय के ...
गुरु की छवि है इतनी निराली मन को बहुत लुभाती
महिमा गुरुवर के वचनों की जन-जन को हर्षाती
जय गुरुवर जन-जन को हर्षाती
इनके चरणन शत् शत् वन्दन शुभ कंचन दीप सजाय के...
जो भी इनकी शरण में आए, सब संकट कट जाये
हम भी भटके हैं जन्मों से हमको भी पार लगाये
हो जय गुरूवर, हमें भी पार लगाये
यह विनती करें तोसें अरज करें शुभ कंचन दीप ...

कुछ विशेष जाप

1. ॐ ह्रीं नमो अर्हते रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा अप्रतिहत-शक्ति भवतु ह्रीं नमः।
3. ॐ श्रीं ह्रीं अर्हं श्री नमः।
4. ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय सर्वसौख्यं कुरु कुरु नमः।
5. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआउसा अनाहत-विद्यायै णमो अरिहंताणं मम सर्व विघ्न शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं श्रीं वद् वद् वाग्वादिनी ह्रीं नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्टबुद्धिणं।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं।
9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः।
10. ॐ ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौं नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वो सहिपत्ताणं झ्रों झ्रों नमः।
12. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं मम इष्ट कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीराय नमः रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

जीवन परिचय

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज

जन्म	: कार्तिक कृष्णपक्ष अष्टमी (गुरुवार)
	22 अक्टूबर, 1970 जसपुरनगर (छत्तीसगढ़)
बचपन का नाम	: सुरेन्द्र कुमार
पिता का नाम	: श्री श्रीपाल जैन
माता का नाम	: श्रीमती चन्द्रप्रभा जैन
गृहत्याग	: शुक्रवार, 08 अप्रैल, 1983
क्षुल्लक दीक्षा	: शुक्रवार, 17 जनवरी, 1986 छत्तरपुर (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा	: सोमवार, 27 जून, 1988 अंदेश्वर पार्श्वनाथ (राज.)
मुनि दीक्षा	: 21 सितम्बर, 1994 इटावा (उत्तर प्रदेश)
दीक्षा गुरु	: पुष्पगिरि प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी महाराज
आचार्य पद	: 10 अप्रैल, 2022 (पुष्पगिरि)
राजकीय अतिथि	: झारखंड, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड

:: विशेष कृति ::

1. सिद्धान्त शतक
2. जैनत्व का बोध
3. धर्म गगन में करें विहार
4. प्रेरक प्रवचन
5. फैशन एक अभिशाप
6. शूलों की सेज
7. दहकते अँगारे
8. आओ लौट चलें
9. पत्थर की मानवाकृति
10. प्रतिमा से प्रतिभा जगे
11. सृजन के द्वार पर
12. हे इन्सान! मत बन तू शैतान
13. जैन शिक्षा भाग-1, 2, 3, 4
14. आराध्य आराधना
15. मंगलं पुष्पदन्ताद्यो
16. जैनाचार संहिता
17. श्रावकाचार संहिता
18. श्रमणाचार संहिता
19. भक्ति-सौरभ
20. अर्हत् चरण सपर्या (जिन-देवार्चना)

विधान

21. श्री भक्तामर स्तोत्र
22. श्री कल्याण मन्दिर
23. स्वयंभू चौबीसी
24. श्री मंशापूर्ण महावीर
25. चौंसठ ऋद्धि सिद्धि
26. आचार्य पुष्पदन्तसागर
27. श्री सम्मेदशिखर
28. माँ जिनवाणी
29. कर्मदहन
30. श्री नवग्रह जिनदेव
31. श्री पुष्पगिरी तीर्थ
32. जैन विधान संग्रह

:: पुण्यार्जक परिवार ::

* **मनोज कुमार जैन, ललित जैन, अतिशय जैन, अर्पण जैन** मै. पारसनाथ पोली बटन, दिल्ली-110031 मो.: 9810056286
* **मुकेश जैन, सौरभ जैन (सौरभसागर फैब्रिक्स)** बिहारी कॉलोनी, दिल्ली
* **श्री शिवसेन जैन, पंकज जैन, धीरज जैन** बलबीर नगर, दिल्ली
* **श्रीमती रेनू जैन श्री संजय जैन** 108 "सौरभांचल" पुष्पांजलि, दिल्ली
* **श्रीमती सुदेश जैन धर्मपत्नी स्व. श्री अनिल कुमार जैन गौरव जैन, खुशबू जैन** अंसारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली
* **विपुल जैन, पारस जैन (चिलकाना वाले)** आजाद नगर, दिल्ली
* **श्री सुभाष चन्द जैन, अचिन जैन, अंकित जैन (उमरपुर वाले)** बलबीर नगर, दिल्ली
* **प्रवीण जैन, दीपक जैन, अक्षत जैन (खेकड़ा वाले)** बलबीर नगर, दिल्ली
* **गौरव जैन, दीपक जैन,** आकाश हौजरी, गांधी नगर, दिल्ली
* **सतीश जैन, देवेश जैन (ककडीपुर वाले)** लक्ष्मी नगर, दिल्ली
* **उमेश जैन सीमा जैन** कृष्णा नगर, दिल्ली
* **सचिन जैन, विकास जैन, गौरव जैन** ए-37, सूरजमल विहार, दिल्ली
* **विकास जैन निधि जैन** कृष्णा नगर, दिल्ली
* **नीलू जैन, श्रीमती कल्पना जैन, श्री रवि कुमार जैन** नया बाजार, ग्वालियर
* **प्रदीप कुमार जैन, मंजू जैन, अक्षय जैन, आरुषि जैन, अवन्या जैन** सूर्य नगर, गाजियाबाद
* **मुकेश जैन, प्रीति जैन, दर्शित जैन, सुन्ह जैन** भोलानाथ नगर, दिल्ली
* **पवित्र जैन (जय पारस गोल्डटच सेन्टर)** कृष्णा नगर, दिल्ली
* **श्रीमती मीना जैन धर्मपत्नी स्व. श्री ओमप्रकाश जैन (बट्टनलाल) श्री मनोज जैन, श्रीमती मंजू जैन, मनीष जैन** (भिण्ड वाले)
* **चिन्मय जैन सुपुत्र दीपक जैन (चिंकी हौजरी)** ईस्ट आजाद नगर, कृष्णा नगर, दिल्ली

* **धनकुमार जैन, प्रणय जैन, ध्वनि जैन, सुविज्ञ जैन** बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली
* **राजीव जैन, अमन जैन, यशी एंटरप्राइज** (Campio Files) शंकर नगर, दिल्ली
* **श्रीमती आभा जैन, श्री नीरज जैन, प्रक्षाल जैन, सिद्धार्थ जैन** हंस वाटिका, रेलवे रोड, शान्ति नगर, मेरठ
* **श्रीमती अर्चना जैन धर्मपत्नी श्री अनिल जैन, अक्षत जैन, आर्जव जैन**
  शंकर नगर, दिल्ली
* **जिन पूजन संगठन** मेरठ
* **श्वेता जैन-शांतनु जैन, वत्सल जैन** सैक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली
* **बेबी वान्या जैन, रितांशी भंसाली** 47, वीर नगर, जैन कॉलोनी, दिल्ली-07
* **सुश्री अमिता, अंजू, अंचल, आशीष जैन** अपने माता-पिता श्रीमती प्रमोद कुमारी जैन एवं श्री महेन्द्र कुमार जैन की पुण्य स्मृति में (लखनऊ)
* **संजय जैन ममता जैन श्रेष्ठ जैन** ई-13/6, कृष्णा नगर, दिल्ली
* **अवनीश जैन अलका जैन** सरधना
* **रवि जैन सोनिया जैन** 79, राम विहार, दिल्ली
* **कोमल जैन रिषभ जैन** 164, योजना विहार, दिल्ली
* **अजय जैन रीना जैन** डी-107, सूरजमल विहार, दिल्ली
* **जिनेश जैन सीमा जैन** 60, श्रेष्ठ विहार, दिल्ली
* **नवीन जैन सुनीता जैन** ए-137, सूरजमल विहार, दिल्ली
* **पंकज जैन नलिनी जैन** ए-141, सूरजमल विहार, दिल्ली
* **अशोक जैन बीना जैन** सी-150, आनन्द विहार, दिल्ली
* **श्रीमती चीना जैन धर्मपत्नी श्री लवकेश कुमार जैन, शुचि जैन, श्रीमती मानसी जैन धर्मपत्नी श्री अर्णव जैन,** भोलानाथ नगर

सौरभांचल प्रकाशन

साहित्य प्रकाशन में ऑन लाईन सहयोग करने के लिए

Scan & Pay

UPI ID : 8448677688@ibl

A/c No.	: 45922900000921
A/c Name	: SAURBHANCHAL PRAKASHAN
Bank	: DCB BANK LIMITED
IFSC Code	: DCBL0000459

8448677688

कृपया इस नम्बर पर (व्हाटसअप)
जमा राशि का स्क्रीन शाट भेजकर रसीद प्राप्त करें।

विधान पुस्तक प्राप्ति स्थल

सौरभांचल प्रकाशन

गणधर गारमेन्टस
IX/842, प्रेम गली नं. 3-सी,
मुलतानी मौहल्ला, सुभाष रोड,
गांधी नगर, दिल्ली-110031

मनोज कुमार जैन
E-17/9, कृष्णा नगर,
दिल्ली-110051
मो. : 9810056286

1200 वर्ष प्राचीन भूगर्भ से प्रगटित
श्री 1008 मंशापूर्ण महावीर स्वामी जी
गंगनहर, मुरादनगर, गाजियाबाद

श्री 1008 आदिनाथ भगवान ''सौरभाँचल''
गन्नौर (हरियाणा)

श्री 1008 पद्मप्रभु भगवान पुष्पगिरी

संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
जीवन आशा हॉस्पिटल प्रेरणा स्रोत
आचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज